कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन



- डॉ राजीव अग्रवाल
- मुहम्मद जुनेद
- नेहा साहू

कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन



डॉ. राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर- शिक्षा संकाय
अतर्रा पी०जी० कॉलेज, अतर्रा(बाँदा)

मुहम्मद जुनेद

एम० एस-सी०(रसायन विज्ञान), एम० एड०

नेहा साहू

बी० एल० एड०

कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल
मुहम्मद जुनेद
नेहा साहू

E - book संस्करण: 2024
मूल्य: ₹25

ISBN: 978-93-342-3657-6

प्रकाशक

नेहा साहू
पीटर इंग्लैंड के सामने, छावनी, बाँदा, (उत्तर प्रदेश) 210001
Mob - 9839473252
ई-मेल - Www.bandaneha18@gmail.com

प्राक्कथन

आज हमारे देश में तथाकथित जागरूक लोग जहाँ चमकीली-भड़कीली, नखरीली-खर्चीली, किन्तु सर्वनाशकारी शिक्षण पद्धति के स्कूलों एवं कॉलेजों से प्रवाहित भिन्न-भिन्न तरह की डिग्रियाँ हासिल करने के बहाव में बह रहे हैं, वहीं परिषदीय विद्यालय उस बहाव के विपरीत दिशा में इत्मीनान से तैर रहे हैं। बहाव के विपरीत दिशा में सिर्फ अपनी जान हथेली पर लेकर अकेले तैरना भी निरापद नहीं है, जबकि अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय पलकों पर तैर रहे हैं। धारा के विरुद्ध अन्य विद्यालयों से युद्ध करते हुए अनुकरणीय परिषदीय विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था का मानना है कि वर्तमान समय की समस्त समस्याओं की जड़ अन्य विद्यालय हैं, जो डिग्रियाँ बाँटते हैं और लोगों को स्वार्थी बनाते हैं। परिषदीय विद्यालय शिक्षा के माध्यम से कार्य के अनुरूप अंक पत्र प्रदान करते है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **"कानपुर देहात जनद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय : एक अध्ययन"** है। प्रस्तुत पुस्तक को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में भारत में शिक्षा के विकास की प्रक्रिया, परिषदीय विद्यालयों की समस्याएँ, कानपुर देहात जनपद में परिषदीय विद्यालयों की स्थिति आदि का वर्णन किया गया है।
द्वितीय अध्याय में अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्यों, समाचार, लेख आदि पर प्रकाश डाला गया है।
तृतीय अध्याय के अन्तर्गत शोध विधि, प्रतिदर्श चयन एवं शोध उपकरण से अवगत कराया गया है।
चतुर्थ अध्याय में कानपुर देहात जनपद के पाँच अनुकरणीय परिषदीय विद्यालयों की विशेषताओं का सविस्तार वर्णन किया गया है।
पंचम अध्याय में शोध अध्ययन से सम्बन्धित निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता एवं सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

20/03/2025

डॉ. राजीव अग्रवाल
मुहम्मद जुनेद
नेहा साहू

विषयानुक्रमणिका

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	अध्ययन परिचय	1-14
	1.1 प्रस्तावना	
	1.1.1 शिक्षा : विकास की प्रक्रिया	
	1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास	
	1.1.2.1 प्राचीन काल में शिक्षा	
	1.1.2.2 मध्यकाल में शिक्षा	
	1.1.2.3 आधुनिक काल में शिक्षा	
	1.1.2.3.1 उद्देश्य	
	1.1.2.3.2 स्वरूप	
	1.1.3 प्राथमिक विद्यालय का स्वरूप	
	1.1.3.1 परिषदीय विद्यालय	
	1.1.3.2 निजी विद्यालय	
	1.1.3.3 मिशनरी विद्यालय	
	1.1.3.4 मदरसा	
	1.1.3.5 संस्कृत विद्यालय	
	1.1.4 उत्तर प्रदेश में परिषदीय विद्यालयों की स्थिति	
	1.1.4.1 शिक्षकों की स्थिति	
	1.1.4.2 छात्र नामांकन	
	1.1.4.3 पाठ्यक्रम	
	1.1.4.4 विद्यालय भवन	
	1.1.5 परिषदीय विद्यालयों की समस्याएं	
	1.1.6 कानपुर देहात जनपद में परिषदीय विद्यालयों की स्थिति	
	1.2 समस्या का प्रादुर्भाव	
	1.3 समस्या कथन	
	1.4 अध्ययन का औचित्य	
	1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या	
	1.5.1 कानपुर देहात	

1.5.2 अनुकरणीय
1.5.3 परिषदीय विद्यालय
1.5.4 अध्ययन
1.6 अध्ययन के उद्देश्य
1.7 अध्ययन का परिसीमांकन
1.8 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

द्वितीय अध्याय	सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	15-20

2.1 प्रस्तावना
2.2 अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य
2.3 अध्ययन से सम्बन्धित समाचार एवं लेख इत्यादि
2.4 समीक्षात्माक निष्कर्ष

तृतीय अध्याय	शोध अध्ययन की प्रक्रिया	21-27

3.1 प्रस्तावना
3.2 शोध विधि
3.3 अध्ययन समष्टि
3.4 न्यादर्श
3.4.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचित्ता
3.4.2 न्यादर्श चयन
3.5 शोध उपकरण
3.5.1 अवलोकन अनुसूची
3.5.2 साक्षात्कार अनुसूची
3.6 प्रदत्त संकलन

चतुर्थ अध्याय	कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय	28-62

4.1 पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर, क्षेत्र- मलासा, कानपुर देहात
4.2 पी.एम.श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ, क्षेत्र- अकबरपुर, कानपुर देहात
4.3 प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर, क्षेत्र- डेरापुर, कानपुर देहात

	4.4 पी.एम.श्री संविलियन विद्यालय भदेसा, क्षेत्र- सरवनखेड़ा, कानपुर देहात 4.5 संविलियन विद्यालय चाँदापुर, क्षेत्र- अमरौधा, कानपुर देहात	
पंचम अध्याय	निष्कर्ष एवं सुझाव	63-69
	5.1 निष्कर्ष 5.2 अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता 5.3 अध्ययन के सुझाव 5.3.1 प्रशासन हेतु सुझाव 5.3.2 समाज हेतु सुझाव 5.3.3 शिक्षकों हेतु सुझाव 5.3.4 विद्यार्थियों हेतु सुझाव 5.4 भावी शोध हेतु सुझाव	
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची		70-71
परिशिष्ट		72-76
	i. अध्ययन से सम्बंधित मानचित्र ii. विद्यालय अवलोकन चित्रावली iii. जीवन वृत्त	

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

मानव को मानवीय गुणों से सुशोभित करने के समस्त संसाधनों में शिक्षा सर्वोत्तम साधन है| वह व्यक्ति में व्यवहारिकता एवं आदर्श का सुन्दर समन्वय करती है परन्तु वर्तमान में प्रचलित शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षा के मूल भावों से भटक कर पाश्चात्य शिक्षा जगत एवं प्रणाली को अपना रही है| आज के तथाकथित शिक्षित एवं विद्वान भारतीय संस्कृति के मूल भावना को नहीं समझा पा रहे हैं| जब अपनी शिक्षा प्रणाली में हम भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं भारतीय विद्वानों के शैक्षिक विचारों को कोई स्थान नहीं देते तो भारत की शिक्षा उन उच्च आदर्शों से अप्राणित कैसे हो सकती है जो भारत को भारत बनाती है|

आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन माना जा रहा है परन्तु शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शोंएवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती| इस सम्बन्ध में महान विचारक डॉ. राधाकृष्णनजी नेकहा है- “शिक्षा सूचना प्रदान करने एवं कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है| इसे शिक्षित व्यक्ति को मूल्य का विचार भी प्रदान करना है| वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक हैं अत: जिस समुदाय में वेरहते हैं उस समुदाय के प्रति भी उनका सामाजिक उत्तरदायित्व है|”

आज भारत में फैली सामाजिक बुराइयों, नैतिकता का हास, अनुशासनहीनता, मूल्यों का हास आदि समस्याओं का हल हमारी व्यवस्था में सुधार लाकर ही किया जा सकता है, इसके लिए शिक्षा प्रणाली में भारत की जनता की आवश्यकता एवं आकाँक्षा के अनुरूप बदलाव लाना होगा| हमारी भारतीय आर्य परंपरा में विद्या प्राप्ति की मुख्य व्यवस्था के रूप में गुरूकुलम एवं पाठशालाएं केंद्र स्थान पर थे| आज 200 वर्ष पहले तक जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा भारत में दी जाती थी, वैसी विश्व के किसी देश में नहीं दी जाती थी| अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में भारत दुनिया के देशों में सबसे अग्रणी था| मनुष्य के आतंरिक गुणों को उजागर करके उसके दोषों का निर्मूलन करने वाली महान भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणों का कुठाराघात सहना पड़ा|

ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुन: जीवित किये बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असम्भव है| अतः इस परम्परा को पुन: प्रस्थापित करना अति आवश्यक है तभी, मैकाले शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारी आज जो दुर्दशा हुई, उससे हम अपने को बचा पायेंगे।

1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है| इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है| जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है| वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है, प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है| धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है, तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरूप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है| बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता है जिसके परिणाम स्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है| शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुरभ्यएवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है|

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है, अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है| संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है, क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके, उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है| सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज और समुदाय बालक की सहायता करते हैं| बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक,माध्यमिक तथा उच्च स्तर के अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके| बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है| उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक, व्यवसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है|

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है| ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथापथ प्रदर्शक देंगे| क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा,

शासक, प्रशासक देगे| वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार व्यापारी देगे| शूद्र छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे| इस प्रकार की प्रणाली में धर्म, चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया| सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति की क्षमता,आतंरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गयी| वर्णों के आधार पर तदानुरूप चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए, जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक है| ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शूद्र-धर्म| कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुईतथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ| जो आज के प्रायोगिक युग में भी यह संघर्ष उच्च स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हीहो, शिक्षा में हो या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है| इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिएसमाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है, जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा सके, और इस प्रायोगिक युग में सकारात्मक सोच का विकास कर सके| वर्तमान समय में उच्च शिक्षा की जो स्थिति है उसमे कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है|

1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास

भारत में शिक्षा के प्रति रुझान प्राचीन काल से ही देखने को मिलता है| प्राचीन काल में गुरुकुलों, आश्रमों तथा बौद्ध मठों में शिक्षा ग्रहण करने की व्यवस्था होती थी| तत्कालीन शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा, तक्षशिला एवं बल्लभी की गणना की जाती है| मध्यकालीन भारत में शिक्षा मदरसों में प्रदान की जाती थी| मुगल शासकों ने दिल्ली, अजमेर, लखनऊ एवं आगरा में मदरसों का निर्माण करवाया| भारत में आधुनिक व पाश्चात्य शिक्षा की शुरुआत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी केशासन काल से हुई|

1.1.2.1 प्राचीन काल में शिक्षा

भारत की प्राचीन शिक्षा अध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा, मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी। यह व्यक्ति के लिये नहीं बल्कि धर्म के लिये थी। भारत की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परम्परा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है। डॉ० अल्टेकर के अनुसार,“वैदिक युग से लेकर अब तक भारतवासियों के लिये शिक्षा का अभिप्राय यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का स्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यों में यह हमारा मार्ग आलोकित करती है” प्राचीन काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया था। भारत 'विश्वगुरु' कहलाता था। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा को प्रकाशस्रोत, अन्तर्दृष्टि, अंतर्ज्योति, ज्ञानचक्षु और तीसरा नेत्र आदि उपमाओं से विभूषित किया है। उस युग की यह मान्यता थी कि जिस प्रकार अन्धकार को दूर करने का साधन प्रकाश है, उसी प्रकार व्यक्ति के सब संशयों और भ्रमों को दूर करने का साधन शिक्षा है। प्राचीन काल में इस बात पर बल दिया गया कि शिक्षा व्यक्ति को जीवन का यथार्थ दर्शन कराती हैतथा इस योग्य बनाती है कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके जो कि मानव जीवन का चरमलक्ष्य है।

प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारंभिक रूप हम ऋग्वेद में देखते हैं। ऋग्वेद युग की शिक्षा का उद्देश्य था, तत्व साक्षात्कार। ब्रह्मचर्य, तप और योगाभ्यास से तत्व का साक्षात्कार करनेवाले ऋषि, विप्र, वैधस, कवि, मुनि, मनीषी के नामों से प्रसिद्ध थे। साक्षात्कार तत्वों का मंत्रों के आकार में संग्रह होता गया वैदिक संहिताओं में, जिनका स्वाध्याय, सांगोपांगअध्ययन, श्रवण, मनन औरनिदिध्यासन वैदिक शिक्षा रही।

विद्यालय‘गुरुकुल', 'आचार्यकुल', 'गुरुगृह' इत्यादि नामों से विदित थे। आचार्य के कुल में निवास करता हुआ, गुरुसेवा और ब्रह्मचर्य व्रतधारी विद्यार्थी बडंग वेद का अध्ययन करता था। शिक्षक को 'आचार्य' और 'गुरु' कहा जाता था और विद्यार्थी को ब्रह्मचारी, व्रतधारी, अंतेवासी, आचार्यकुलवासी। मंत्रों के दृष्टा अर्थात् साक्षात्कार करनेवाले ऋषि अपनी अनुभूति और उसकी व्याख्या और प्रयोग को ब्रह्मचारी, अंतेवासी को देते थे। गुरुके उपदेश पर चलते हुए वेद ग्रहण करने वाले ब्रतचारी श्रुतर्षि होते थे। वेदमंत्र कंठस्थ किए जाते थे। आचार्य स्वर से मंत्रों का परायण करते और ब्रह्मचारी उनको उसी प्रकार दोहराते चले जाते थे। इसके पश्चात् अर्थबोध कराया जाता था। ब्रह्मचर्य में चले जाते थे। इसके पश्चात् अर्थबोध कराया जाता था। ब्रह्मचर्य का पालन सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य था। स्त्रियों के लिए भी आवश्यक समझा जाता था। आजीवनब्रह्मचर्य पालन करनेवाले विद्यार्थी को नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहते थे। ऐसी विद्यार्थिनी ब्रह्मवादिनी कही जाती थी।

यज्ञों का अनुष्ठान विधि से हो, इसलिए उद्‌ाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा को आवश्यक शिक्षा दी जाती थी। वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और निरुक्त उनके पाठ्य होते थे। पाँच वर्ष के बालक की प्राथमिक शिक्षा आरम्भ कर दी जाती थी। गुरुगृह में रहकर गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता उपनयन संस्कार से प्राप्त होती थी। 8 वें वर्ष

मे ब्राह्मण बालक के, 1 वे वर्ष मे क्षत्रिय के और 2 वे वर्ष मे वैश्य के उपनयन की विधि थी। अधिक से अधिक यह 6, 22 और 24 वर्षों की अवस्था में होता था। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्यार्थी गुरुगृह में 12 वर्ष वेदाध्ययन करते थे। तब वे स्नातक कहलाते थे। समापवर्तन के अवसर पर गुरुदक्षिणा देने की प्रथा थी। समावर्तन के पश्चात् भी स्नातक स्वाध्याय करते रहते थे। नैष्ठिक ब्रह्मचारी आजीवन अध्ययन करते थे। समावर्तन के सम ब्रह्मचारी दण्ड, कमण्डलु, मेखला, आदि को त्याग देते थे। ब्रह्मचर्य व्रत में जिन-जिन वस्तुओं का निषेध था अब से उनका उपयोग हो सकता था। प्राचीन भारत में किसी प्रकार की परीक्षा नहीं होती थी और न ही कोई उपाधि दी जाती थी। नित्य पाठ पढ़ाने के पूर्व ब्रह्मचारी ने पढ़ाए हुए पृष्ठ को समझा है और उसका अभ्यास नियम से किया है या नहीं, इसका पता आचार्य लगा लेते थे। ब्रह्मचारी अध्ययन और अनुसन्धान में सदा लगे रहते थे तथा वाद-विवाद और शाखार्थ में सम्मिलित होकर अपनी योग्यता का प्रमाण देते थे।

1.1.2.2 मध्यकाल में शिक्षा

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही, इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जानने वाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिन्दू, अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रुचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के संरक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदें बनती गयी, साथ ही मकतबों, मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। मकतब प्रारम्भिक शिक्षा के केन्द्र होते थेऔर मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबों की शिक्षा धार्मिक होती थी। विद्यार्थी कुरान के कुछ अंशों को कण्ठस्थ करते थे। वे पढ़ना, लिखना, गणित, अर्जीनवीसी और चिट्ठीपत्री भी सीखते थे। इनमें हिन्दू बालक भी पढ़ते थे।

मकतबों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहाँ धार्मिक प्रधानता की शिक्षा दी जाती थी। साथ ही साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की पढ़ाई होती थी। सरकार शिक्षकों को नियुक्त करती थी। कहीं-कहीं प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा भी उनकी नियुक्ति होती थी। अध्यापन फारसी के माध्यम से होता था। अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ्य विषय था। छात्रावास का प्रबन्ध किसी-किसी मदरसे में होता था। दरिद्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलती थी। अनाथालयों का संचालन होता था। शिक्षा नि:शुल्क थी। हस्तलिखित पुस्तकें पढ़ी और पढ़ाई जाती थीं। राजकुमारों के लिए महलों के भीतर शिक्षा का प्रबन्ध था। राजव्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्ध संचालन, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून आदि का ज्ञान गृह शिक्षक से प्राप्त होता था। राजकुमारियाँ भी शिक्षा पाती थीं। शिक्षकों का बड़ा सम्मान था। वे विद्वान् और सच्चरित्र होते थे। छात्र और शिक्षकों का आपसी सम्बन्ध प्रेम और सम्मान का था। सादगी, सदाचार, विद्या प्रेम और धर्माचरण पर जोर दिया जाता था। कंठस्थ करने की परम्परा थी। प्रश्नोत्तर, व्याख्या और उदाहरणों द्वारा पाठ पढ़ाए जाते थे। कोई परीक्षा नहीं थी। अध्ययन अध्यापन में प्राप्त अवसरों में शिक्षक छात्रों की योग्यता और विद्धत्ता के विषय में तथ्य प्राप्त करते थे। दण्ड प्रयोग किया जाता था। जीविकोपार्जन के लिए भी शिक्षा दी जाती थी। दिल्ली, आगरा, बीदर, जौनपुर, मालवा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र थे। मुसलमान शासकों के संरक्षण के अभाव में भी संस्कृत काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन ग्रंथों की रचना और उनका पठन-पाठन बराबर होतारहा।

1.1.2.3 आधुनिक काल में शिक्षा

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्मप्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों से डाली गई। उन्होंने कई विद्यालय स्थापित किए। प्रारम्भ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा। धीरे-धीरे कार्यक्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढ़ाए जाते थे। रविवार को विद्यालय बन्द रहता था। अनेक शिक्षक छात्रों की पढ़ाई अनेक श्रेणियों में कराते थे। अध्यापन का समय नियत था। साल भर में छोटी-बड़ी अनेक छुट्टियाँ हुआ करती थीं।

150 वर्षों के बीतते-बीतते व्यापारी ईस्ट इंडिया कम्पनी राज करने लगी। विस्तार में बाधा पड़ने के डर से कम्पनी शिक्षा के विषय में उदासीन रही। फिर भी विशेष कारण और उद्देश्य से 1780 में कलकत्ता में 'कलकत्ता मदरसा' और 1791 में बनारस में 'संस्कृत कालेज' कम्पनी द्वारा स्थापित किए गए। धर्मप्रचार के विषय में भी कम्पनी की पूर्वनीति बदलने लगी। कम्पनी अब अपने राज्य के भारतीयों को शिक्षा देने की आवश्यकता को समझने लगी। 1883 के आज्ञापत्र के अनुसार शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चय किया गया। किस प्रकार की शिक्षा दी जाए, इसपर प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों में मतभेद रहा। वाद विवाद चलता रहा। अन्त में लार्ड मैकाले के तर्क वितर्क और राजा राममोहन राय के समर्थन से प्रभावित हो 1835 ई. में लार्ड बेंटिक ने निश्चय किया कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य एवं यूरोपीय इतिहास ,विज्ञान इत्यादि की पढ़ाई हो और इसी में 1883 के आज्ञापत्र में अनुमोदित धन का व्यय हो। प्राच्य शिक्षा चलती रहे,परन्तु अंग्रेजी और पश्चिमी विषयों के अध्ययन और अध्यापन पर जोर दिया जाए।

1.1.2.3.1 उद्देश्य

देश के विकास के लिए मानवीय ससाधनो को विकसित करना आवश्यक होता है मानवीय ससाधनो के विकास का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्भव किया जाता है| मानवीय संसाधनों के विकास की दृष्टि से आधुनिक शिक्षा कामहत्वपूर्ण स्थान है यह एक शक्तिशाली माध्यम है|

आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत है-

o प्राचीन मर्यादाओं का सम्मान करते हुए नयी मान्यताओं एवं विचारधाराओं के अग्रदूतों को तैयार करना|

o लोकतान्त्रिक आदर्शों की सुरक्षा करना तथा व्यक्ति एवं समाज में सामंजस्य स्थापित करना|

o सामाजिक कुरीतियों की मुक्ति में सहायता प्रदान करना|

o सत्य के परिप्रेक्ष्य में नवीनज्ञान की खोज करना, पुराने ज्ञान और पुराने विश्वासों की नयी आवश्यकताओंऔरखोजों के प्रकार में व्याख्या करना|

o व्यक्तियों में जन्मजात गुणों की खोज करना तथा प्रशिक्षण के माध्यम से उनका विकास करना|

o राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप जनशक्ति तथा जाति की सामाजिक आकाँक्षाओं की पूर्ति के लिए आधुनिक शिक्षाप्रणाली का प्रसार करना|

o भारत में ऐसी विभूतियों को तैयार करना जो राजनीतिक, प्रशासन, व्यवसाय, उद्योग एवं वाणिज्य आदि केक्षेत्रों में स्वस्थ प्रतिनाधित्व कर सकें।

1.1.2.3.2 स्वरूप

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिकनियन्त्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदण्ड होती है| भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है,जिसेसन्1835 ई. में लागू किया गया था| जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यहआवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठभूमि उद्देश्य चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करें|

1835 में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोहोंको तैयार करना है| इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 में भारत की साक्षरता 40% केआँकड़े को भी पार नही कर पाई स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 3% ही थी| इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गों को भारत के शेष समाज में पृथक रखने में महत्वपूर्णभूमिका निभाई| लगभग पिछले 200 वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह शिक्षा नगर और उच्च वर्ग केन्द्रीय, श्रम तथा बौद्धिक कार्यों से रहित थी|

1.1.3 प्राथमिक विद्यालय का स्वरूप

1.1.3.1 परिषदीय विद्यालय

सरकारी स्कूलों को देश की सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। यह राष्ट्रीय स्तर या राज्य स्तर पर हो सकता है। सरकारी स्कूलों में कम शुल्क संरचना होती है क्योंकि उन्हें राज्य और संघीय सरकारों द्वारा अनुदान और वित्त पोषितकिया जाता है।

1.1.3.2 निजी विद्यालय

निजी स्कूल एक निजी संगठन या एनजीओ द्वारा वित्त पोषित एक स्कूल है।पहली नज़र में, यह सभी के लिए स्पष्ट है कि निजी स्कूलों में अधिक सुविधाएँ, बेहतर उपकरण और भवन हैं, लेकिन सरकार के स्कूलों की तुलना में भारी **मिशनरी**अध्ययन लोड है।

1.1.3.3 मिशनरी विद्यालय

विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी लेकिन अब इनमें काफी सुधार आया है, इन विद्यालयों में पहली वरीयता अंग्रेजीभाषा को दी जाती है|

1.1.3.4 मदरसा

मदरसा किसी भी प्रकार के शैक्षिक संस्थान के लिए अरबी शब्द है, चाहे धर्मनिरपेक्ष या धार्मिक (किसी भी धर्म का), और स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय शब्द अलग तरह से प्रयोग होता है। शब्द मदरसा अलग-अलग तरीके से लिप्यंतरित है, मदरसा, मेडरेसा, मदरसा, मदरज़ा, मेडरेस आदि। पश्चिम में, शब्द आमतौर पर एक विशेष प्रकार के धार्मिक स्कूल को संदर्भित करता है, हालांकि इस अध्ययन का एकमात्र विषय नहीं हो सकता है। भारत जैसे देशों में,मदरसा के सभी छात्र मुसलमान नहीं हैं; एक आधुनिक पाठ्यक्रम भी है।

1.1.3.5 संस्कृत विद्यालय

संस्कृत विद्यालय वे विद्यालय होते हैंजिसमें मूल रूप से संस्कृत की शिक्षा दी जाती है|

1.1.4 उत्तर प्रदेश में परिषदीय विद्यालयों की स्थिति

21वीं शताब्दी की वैश्विक अर्थव्यवस्था ऐसे वातावरण में उन्नति कर सकती है, जो रचनात्मकता एवं काल्पनिकता, विवेचनात्मक सोच और समस्या के समाधान से संबंधित कौशल पर आधारित हो। अनुभवमूलक विश्लेषण शिक्षा और आर्थिक उन्नति के मध्य सुदृढ़ सकारात्मक सम्बन्ध होते हैं। भारत में स्कूल जाने वालों की आयु 6-8 वर्ष के मध्य की 30.5 करोड़ की (2011 की जनगणना के अनुसार) की विशाल जनसंख्या है, जो कुल जनसंख्या का 25% से अधिक है। यदि बच्चों को वास्तविक दुनिया का आत्मविश्वास से सामना करने की शिक्षा दी जाए तो भारत में इस जनसांख्यिकीय हिस्से की संपूर्ण सामर्थ्य का अपने लिये उपयोग करने की क्षमता है।

1.1.4.1 शिक्षकों की स्थिति

जहां बच्चे विद्यालयी शिक्षा का केंद्र होते हैं, बच्चों में ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एक अध्यापक की होती है। सर्व शिक्षा अभियान की शुरुआत के साथ ही आरम्भिक कक्षाओं में अध्यापकों के 9.48 लाख पदों का सृजन किया गया है, इन पदों के लिये अध्यापकों की नियुक्ति से छात्र-शिक्षक अनुपात में 42:1 से 24:1 का सुधार हुआ है। यद्यपि अब भी ऐसे विद्यालय है, जिनमें अध्यापक केवल एक हो या उनकी संख्या अपर्याप्त हो। इसके लिये राज्य सरकारों को अध्यापकों के एक समान वितरण के लिये नियोजन करने की आवश्यकता है एवं सेवानिवृत्त होने वाले अध्यापकों के स्थान पर दक्ष अध्यापकों की नियुक्ति के लिये एक वार्षिक कार्यक्रम रखा जाना चाहिये। वर्तमान में सरकारी विद्यालयों में नियमित अध्यापकों में से 8प्रतिशत व्यावसायिक रूप से योग्यता संपन्न हैं। 20 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में सभी अध्यापकों के पास अपेक्षित योग्यता है। सरकार आगामी 2-3 वर्षों तक शेष 6 राज्यों केंद्र शासित प्रदेशों के सभी अध्यापकों का पूर्णतया दक्ष होना सुनिश्चित करने के लिये तमाम कदम उठा रही है। मंत्रालय द्वारा वर्ष 2013 में करवाए गए एक अध्ययन के परिणामों के अनुसार, अध्यापकों की औसत उपस्थिति लगभग 83 प्रतिशत थी।इसको बढ़ोतरी कर 100 प्रतिशत तक लाने की आवश्यकता है।

1.1.4.2 छात्र नामांकन

ग्रामीण परिवेश के लोगों को शिक्षा देना और उन्हें शिक्षा लेने के लिए तैयार करना शाब्दिक रूप से जितना सरल प्रतीत होता है, व्यवहारिक रूप से उतना ही दुष्कर कार्य है। आंकड़े बताते हैं कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों का नामांकनलगातार घट रहा हैऔर बेसिक शिक्षा विभाग लाख कोशिश के बावजूद नामांकन बढ़ाने में असफल रहा है। अगर कुलनामांकन पर गौर करें तो आप पाएंगे कि छात्र संख्या सरकारी विद्यालय से निजी विद्यालय की तरफ शिफ्ट हो रही हैऔर यह भारत के समृद्ध होने का प्रतीक है।

1.1.4.3 पाठ्यक्रम

शिक्षण मे एक मुख्य पाठ्यक्रम, एक पाठ्यक्रम अथवा अध्ययन का कोर्स होता है, जिसकी भूमिका को केंद्रीय माना जाता है तथा जिसे आमतौर पर एक स्कूल या स्कूल पद्धति के सभी छात्रों के लिए अनिवार्य रूप से लागू किया जाता है। हालांकि, हमेशा ही ऐसा नहीं होता है। उदाहरण के लिए, कोई स्कूल संगीत संबंधी कक्षा को अनिवार्य कर सकता है, लेकिन यदि छात्र आर्केस्ट्रा, बैंड, कोरस इत्यादि जैसी, किसी प्रदर्शन संबंधी संगीत में भाग लेते हैं, तो वे इससे बाहर रहने का चुनाव कर सकते हैं। प्रमुख (कोर) पाठ्यक्रम को अक्सर प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर स्कूली बोर्ड, शिक्षाविभाग या शिक्षा का कार्य देखने वाली अन्य प्रशासनिक संस्थाओं द्वारा स्थापित कर दिया जाता है।

1.1.4.4 विद्यालय भवन

बेसिक शिक्षा परिषद के जिले में स्थित 296 विद्यालय भवन खस्ताहाल स्थिति में हैं। कहीं बरसात में छत से पानी टपकता है तो कई भवन अत्यंत जर्जर स्थिति में पहुंच चुके हैं। इस बात का खुलासा विभागीय मुख्यालय के निर्देश परहुई जाँच में हुआ है|

1.1.5 परिषदीय विद्यालयों की समस्याएँ

विद्यालय में अध्ययनरत छात्र और छात्राएं अव्यवस्थाओं के बीच पठन-पाठन का कार्य करने को मजबूर हैं। पूरे विद्यालय प्रांगण में साफ-सफाई न होने के कारण जगह-जगह कूड़े करकट का अंबार लगा हुआ है। विद्यालय परिसर में बालक और बालिकाओं के लिए निर्मित शौचालय भवन में हमेशा ताला लटकता रहता है, जिससे बच्चों को मजबूर होकर खुले में शौच जाना पड़ता है। विद्यालय प्रांगण में ही मौजूद पूर्व माध्यमिक विद्यालय बस्ती का नवनिर्मित शौचालय देखरेख के अभाव में पूर्णतया क्षतिग्रस्त होकर निष्क्रिय बना हुआ है। जिसका उपयोग बच्चों के शौच क्रिया करने के बजाय विद्यालय परिसर से निकले हुए कूड़ा करकट को रखने के उपयोग में किया जा रहा है। शौचालय के दरवाजे टूटे हुए हैं, अंदर काफी मात्रा में कूड़ा भरा हुआ है। यहाँ भी बच्चों को शौच के लिए बाहर खुले में जाना पड़ता है। स्वच्छ भारत मिशन अभियान के तहत सभी परिषदीय विद्यालयों में लाखों रुपए की लागत से शौचालय का निर्माण कराया गया था, कि बच्चों को खुले में शौच न जाना पड़े लेकिन विद्यालय प्रशासन व सम्बन्धित सफाई कर्मी की उदासीनता एवं लापरवाही के चलते स्वच्छता अभियान की धज्जियाँ उड़ाने के साथ ही कहीं न कहीं भवनों की दुर्दशासे सरकारी राजस्व को भी क्षति पहुंचाईजा रही है। बच्चों के खुले में शौच जाने से जहाँ एक तरफ वातावरण दूषित होरहा है।

वहीं दूसरी तरफ बच्चों में संक्रामक बीमारियों के होने का खतरा भी उत्पन्न हो रहा है। कायाकल्प योजना के तहत विद्यालय भवन की रंगाई,पुताई व वॉल पेंटिंग का कार्य अभी तक नहीं कराया गया है और न ही भवन की फर्श परटाइल्स लगवाई गई है।

1.1.6 कानपुर देहात जनपद में परिषदीय विद्यालयोंकी स्थिति

बेसिक शिक्षा में सुधार को लेकर चिंतित मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक ने दो टूक शब्दों में कहा कि यदि स्कूल में बच्चे नहीं आएंगे तो शिक्षकों का भी मतलब नहीं है। शिक्षक यदि जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे तो विद्यालय में पढ़ने के लिए स्वत: बच्चे नाम लिखाने पहुंचेंगे। झींझक ब्लाक व सरवनखेड़ा ब्लाक क्षेत्र के तमाम विद्यालयों में उपस्थिति सामान्यसे भी कम होने पर उन्होंने कड़ी नाराजगी जताई।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

हम सभी जानते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहाँ केवल पेट की पूर्ति दिखाई देती है| इस शिक्षा प्रणाली में देश को अन्धकार में ले जाकर नाश के कगार पर खड़ा कर दिया है| शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है इनके बीच तनाव ही तनाव देखने को मिलता है| ऐसे में भारत के हित एवं उत्कर्ष के लिए सबसे जरूरी है कि देशभर के परिषदीय विद्यालयों की शिक्षा प्रणाली में सुधार लाया जाए| क्या हम सब शिक्षा प्रणाली में रुचि लेते हैं इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने हेतु मेरे द्वारा यह शोध प्रबन्ध विषय वस्तु लेने की इच्छा जागृत हुईऔर फलस्वरुप मे इस शोध कार्य की प्रगति हेतु अग्रसर हुआ|

1.3 समस्या कथन

“कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन!”

1.4 अध्ययन का औचित्य

शिक्षा जीवन के लिए अत्यत महत्वपूर्ण है| उचित शिक्षा मे मूल्यवान समाज का निर्माण सम्भव है| शिक्षा से ही हम ज्ञानात्मक परम्परा को आगे बढ़ाते है| शिक्षक एवं शिक्षा की प्रक्रिया को इस बात के प्रति सावधानी बरतनी होगी कि शिक्षा के नाम पर हमें पूर्वाग्रहों और अवधारणाओं को बालक के मन में रोककर उनकी स्वतन्त्रता को सीमित ना करें| शिक्षा का उद्देश्य है सही रिश्तों की स्थापना शिक्षक, विद्यार्थी और समाज के प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को पहचाने, स्वयं की पहचान के साथ जीवन की समग्रता को समझे| किसी भी राष्ट्र या समाज को ऊपर उठाने का श्रेय शिक्षा को जाता है| इसी मेंपरिषदीय विद्यालय की शिक्षा में सुधार किया जा सकता है|

लघु शोध कार्य कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालयों पर आधारित है, जिसमें विद्यालय की विशिष्टताओंका वर्णन किया गया है, जो वर्तमान शिक्षा की पद्धति में सुधार कर समृद्ध भारत को पुनर्जागरण का शंखनाद करते हैं|

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.5.1 कानपुर देहात

कानपुर देहात भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश का एक जिला है। माती(अकबरपुर) इसका मुख्यालयहै। क्षेत्रफल-3021वर्गकि०मी०,जनसंख्या-17,96,184(2011जनगणना), साक्षरता-75.8%, एस०टी०डी०कोड- 05113

वर्ष1977 में कानपुर जिले को दो भागों (कानपुर नगर तथा 'कानपुर देहात') में विभाजित कर दिया गया। 1979 में पुनः दोनो को मिला दिया गया किन्तु 1981 में पुनः विभाजन किया गया। 1जुलाई 2010 को इसका नाम बदलकर 'रमाबाई नगर जिला' कर दिया गया जिसे 2012 में फिर से 'कानपुर देहात' कर दिया गया।

1.5.2 अनुकरणीय

यहाँ 'अनुकरण' शब्द यूनानी (ग्रीक) भाषा के “मिमेसिस”(Mimesis) के पर्याय रूप में प्रयुक्त हुआ है। “मिमेसिस” का अंग्रेजी अनुवाद है - 'इमिटेशन(Imitation)।

हिन्दी में “अनुकरण” अंग्रेजी के 'इमिटेशन' शब्द से रूपान्तर होकर आया है। अनुकरण का सामान्य अर्थ है- नकल या प्रतिलिपि या प्रतिछाया, जबकि वर्तमान सन्दर्भ में उसका मान्य अर्थ है- “अभ्यास के लिए लेखकों और कवियों को उपलब्ध उत्कृष्ट रचनाओं का अध्ययन एवं अनुसरण करना।”

अनुकरणीय से आशय किसी ऐसे सराहनीय कदम या कार्य से है जो अनुकरण करने योग्य हो। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि किसी कार्य की विशेषताओं को अपने आचरण में ढालना या उसकी नकल करना एक अनुकरण है।

1.5.3 परिषदीयविद्यालय

प्रस्तुत शोध में परिषदीय विद्यालयों से आशय बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित किये जाने वाले कक्षा 1 से 8तक के अर्थात प्राथमिक विद्यालयों से है।

1.5.4 अध्ययन

v/;;u ,d dyk gS ftleas ,d euq’; dqN djus] fl[kkus vkfn ckrksa dks lh[krk gSA

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

thou ds lHkh dk;Z lmn~ns”; gksrs gS D;ksafd mn~ns”; ds vHkko esa thou fn”kkghu gks tkrk gSA fdlh Hkh dk;Z dh lQyrk mlds fu/kkZfjr fd;s x;s mn~ns”;ksa dh Li’Vrk v/;;u dks ljy o lQy cuk nsrh gSA blfy, izLrqr v/;;u esa “kks/kdrkZ us dqN mn~ns”; fu/kkZfjr fd, gSa rkfd “kks/kdrkZ dks lgh fn”kk fey ldsA izLrqr v/;;u ds mn~ns”; fuEu gSa%&

कानपुर देहात जनपद के परिषदीय विद्यालयों के शैक्षिक क्रियाकलापों का अध्ययनकरना।

कानपुर देहात जनपद के परिषदीय विद्यालयों के भौतिक वातावरण का अध्ययन करना।

कानपुर देहात जनपद के परिषदीय विद्यालयों को शिक्षण पद्धति एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।

कानपुर देहात जनपद के परिषदीय विद्यालयों को प्राप्त उपलब्धियों का अध्ययन करना।

कानपुर देहात जनपद के परिषदीय विद्यालयों के अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।

1.7 अध्ययनकापरिसीमांकन

प्रस्तुत शोध में केवल कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है|

प्रस्तुत शोध में कानपूर देहात जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शैक्षिक क्रियाकलापों एवं भौतिक सुविधाओं तक ही सीमित है।

1.8 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहाँ शिकंजा जिन्दगी जीने का नहीं अपितु रोने का पाठ पढ़ाती है इस से बचने के परिषदीय विद्यालय के उदय की आवश्यकता पड़ी है| ध्वस्त हुई शिक्षा प्रणाली को पुनःजीवित किये बिना भारतीय शिक्षा में सुधार असम्भव है तभी परिषदीय की स्थिति को सुधार कर शिक्षा की गुणवत्ता को बचा पायेंगे|

उपरोक्त कथन के आलोक में परिषदीय विद्यालय शिक्षा में अपने आपको कितना समाहित करते है, कितना महत्व देते हैं तथा इनसे सम्बन्धित सामने क्या समस्याएँ आती है, इसके क्या लाभ हैं आदि को ज्ञात करना ही अध्ययन का मूल ध्येय है|

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

यह तो सर्वविदित है कि शोध एक चरणबद्ध प्रक्रिया है एवं यह भी सत्य है कि उपलब्ध ज्ञान में अत्यंत तीव्र गति सेवृद्धि हो रही है अत: यदि उसके लिए स्वयं को उपलब्ध ज्ञान के सम्बन्ध में अद्यतन बनाए रखना आवश्यक हो जाता है|

साहित्य अध्ययन प्रत्येक अनुसंधान प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है, वस्तुतः साहित्य का अध्ययन एक कठोर परिश्रम का कार्य है, प्रत्येक अनुसंधानकर्ता का अनुसंधान में साहित्य का अध्ययन एक अनिवार्य और प्रारम्भिक कदम है, मानविकी विषयों में तो साहित्य पुनरावलोकन के बिना अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता है, अतीत अनुभवों का लाभ उठाते हुए अपनी यात्रा की सीढ़ियों की ओर अग्रसर होता है, मानव संचित ज्ञान के आधार पर पुराने अनुभवों एवं आदर्शों के सहारे बहुत-सी असफलताओं और निराशा से मुक्त रहता है, मानव का समस्त संचित ज्ञान विवेकपूर्ण क्रमबद्ध ढंग से हो सके प्रत्येक नई पीढ़ी को धरोहर के रूप में प्राप्त होता है, एवं उसी के आधार पर अपने स्तर से आगे बढ़ते है, जब तक हमें इस बात का ज्ञान नहीं होगा, कि जिस क्षेत्र को हमने शोध कार्य के लिए चुना हैऔर क्षेत्र में कितना अध्ययन किन साधनों की मदद से किस कार्य को किया गया हैऔर उसके क्या परिणाम निकले है, तब तक हम उस क्षेत्र में कोई नया कार्य या नया शोध करने में असमर्थ रहेंगे|

ऐतिहासिक अन्वेषण में समस्या से उपलब्ध संपूर्ण सामग्री चार्ट, पत्रों, लेख आदि के रूप में मीमांसा करना हो अनुसंधान का मुख्य कार्य क्षेत्रीय अध्ययनों में जहाँ उपूब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा स्व संकलन का कार्य होता है, वह समस्या से सम्बन्धित समस्त साहित्य का अध्ययन अनुसंधान का प्रत्मिकआधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है|

2.2अध्ययन से सम्बन्धित कतिपय शोध कार्य

सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन हेतु विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, लघुशोध,शोध प्रबन्ध, शैक्षिक सर्वेक्षण का अध्ययनकिया गया है,जिसकाविवरण निम्न प्रकार से है-


अनुसूचित जाति के सन्दर्भ में प्राथमिक स्तर पर
बालिका शिक्षा की स्थिति : एक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
की
डॉक्टर ऑफ फिलोस्फी (शिक्षा)
उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध

BUNDEL KHAND UNIVERSITY

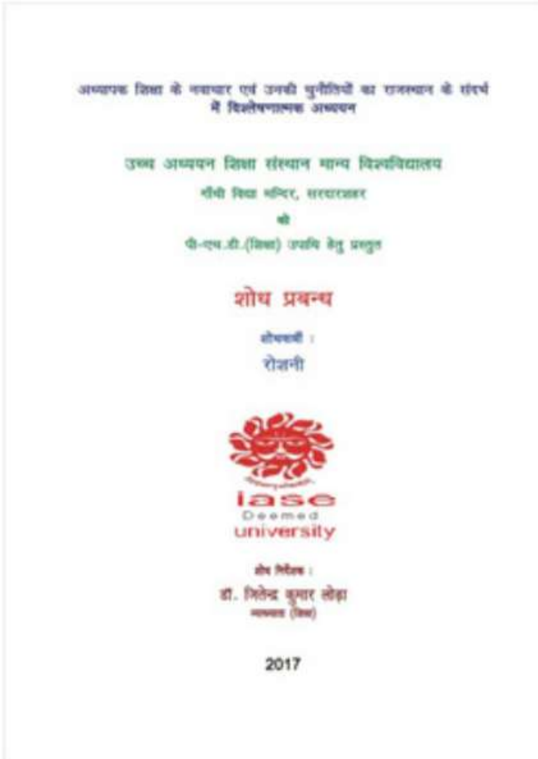
शोध निर्देशिका

शोधार्थी
नरेन्द्र कुमार सिंह यादव

सन् - 2000

(1) नरेन्द्र कुमार सिहयादव(2000) ने अनुसूचित जाति के संदर्भ में प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति: एकअध्ययन पर शोध कार्य किया| बालिका शिक्षा के प्रति अधिकांश माता-पिता का दृष्टिकोण सकारात्मक होते हुए भी अनेक समस्याएँ हैं| उनमें कुछ प्रत्यक्ष रुप में हैं, जैसे- किताब, ड्रेस इत्यादि! कुछ अप्रत्यक्ष रूप में लड़की 10 सालके लगभग हो जाती है, तो वह घर पर बच्चों के खेलने के अलावा उनकी गरीबीपन को दूर करने में माता-पिता के साथबड़े लोगों के यहाँ काम पर जाती है| शिक्षा नि:शुल्क होने का बाद भी बालिकायें घर में रोजो-रोटी की आवश्यकतायें पूर्ति करने में सहयोग के कारण जिस अनुपात में अनुसूचित जाति की बालिकाओं की प्रगति होनी चाहिये, नहीं हो सकी|

(2) प्रभा भट्ट (2006) ने माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की समस्या समाधानकी योग्यता पर बुद्धि,आत्मसंकल्पना, समायोजन तथा तार्किक योग्यता का प्रभाव पर शोध कार्य किया| माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता पर विद्यालय के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है, जबकि बुद्धि,आत्मसंकल्पना, समायोजन, तार्किक योग्यता को सह चर के रूप में लिया गया है|


अध्यापक शिक्षा के नवाचार एवं उनकी चुनौतियों का राजस्थान के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय
गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर
को
पी-एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

रोशनी

iase
Deemed
university

डॉ. जितेन्द्र कुमार लोढ़ा

2017

(3)रोशनी (2017) ने अध्यापक शिक्षा के नवाचार एवं उनकी चुनौतियों का राजस्थान के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन पर शोध कार्य किया| राजस्थान में शिक्षा एक उत्पादीय संस्थान सा अस्तित्व उसके हितधारी वर्गों की आवश्यकताओं व अपेक्षाओं से युक्त है| वर्तमान के उत्पाद के केन्द्र में उसका हितधारी होत्या है| ऐसे में शिक्षक की आवश्यकता, निर्णय एवं अपने समग्र परिवेश में उनको संचानल को हितधारी वर्गों की मांगों के अनुरूप रखना आज केयुग की सबसे बड़ी आर्थिक व सामाजिक चुनौती है|

(4) बरनवाल जयशंकर(2006) ने ग्रामीण विकास में नवाचार की भूमिका: “तहसील मेहंनगर आजमगढ़, का भौगोलिक विश्तेषण पर शोध कार्य किया है| वर्तमान में क्षेत्र में संचालित विकास योजनाओं के साथ उसमें विद्यमान कमियों को रेखांकित करते हुए भावी योजनाओं के समन्वयन पर विशेष बल देने की आवश्यकता है कृषि, लघु एवं कुटीर उद्योग तथा परिवहन व संचार के विकास हेतु विवेकपूर्ण नियोजन में इन, अवययों के विभिन्न पक्षों पर साथ-साथविचार करते हुए, क्षेत्र के संतुलित विकास को ध्यान में रखकर भावी स्वरूप को निश्चित करने का प्रयास किया गया है।

बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षाः
प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के सन्दर्भ में
एक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी
के अन्तर्गत
पी-एच० डी०(शिक्षा)
की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध

1998-99

निर्देशिका
डॉ० (श्रीमती) मृदुला भदौरिया
उपाचार्य शिक्षा विभाग,
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय,
कानपुर

शोध कर्त्री
रंजना मिश्रा
एम० ए०, एम० एड०,
डी० सी० एच०

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

(5)रंजना मिश्रा (1999) ने बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा: प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के सन्दर्भ में एक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक स्तर पर प्रत्येक कक्षा में बालिकाओं की नामांकन संख्या बालकों की तुलना में अधिक है।

अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन करने पर छात्राओं ने माता–पिता की अस्वस्थता, अभिभावकों ने मेहमानों का आना तथा अध्यापकों ने गृह कार्य में व्यस्तता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण माना है।



छात्राओं की उपलब्धि का स्तर संतोषजनक न होने के कारणों में अध्यापकों ने परिश्रम के अभाव को सर्वाधिक महत्व दिया है और बालिकाओं ने इस सम्बन्ध में अधिकांशतः अनभिज्ञता प्रकट की है।

(6)शैल प्रभा(2003) ने जनपद फिरोजाबाद के लघु एव वृहद परिवारो की छात्राओ के पारिवारिक लगाव काउनके व्यक्तिगत मूल्यों, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव के संदर्भ में एक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि लघु एवं वृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों से निम्न धनात्मक से संबंध है।

लघु परिवारों में पारिवारिक लगाव का सृजनात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।



लघु एवं वृहद परिवारों की छात्रों के पारिवारिक लगाव का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है।

(7) अमित कुमार(2020) ने बांदा जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय :एक अध्ययन के संदर्भ में एक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश परिषदीय विद्यालय अनुकरणीय नहीं है क्योंकि विद्यालय में पर्याप्त संसाधनों की कमी है।

एक आदर्श परिषदीय विद्यालय के संचालन के लिए संबंधित समुदाय का सहयोग बहुत जरूरी है।

विद्यालय के वृक्षारोपण एवं बैल/लता को जानवरों से बचाने के लिए ऊंची एवं मजबूतचहारदीवारी की आवश्यकता होती है जो ज्यादातर विद्यालयों में नहीं है।


"हरियाणा के रोहतक मण्डल में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक"

SARV SHIKSHA ABHIYAN KI PRABHAVSHEELTA EVAM USEY PRABHAVIT KARNE WALE KARAK

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी से शिक्षा शास्त्र में विद्यावाचस्पति
पी-एच०डी० की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

शोधकर्ता :
संजय कुमार

शोध निर्देशक :
डॉ. शशिकान्त
पूर्व आचार्य, शिक्षा संस्थान
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय,
झांसी

सहनिर्देशक :
डॉ. दिनेश कुमार शर्मा
रीडर शिक्षा विभाग
जे०वी०जैन कॉलेज, सहारनपुर

शिक्षा संस्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी
2008

(8) संजय कुमार(2008) ने हरियाणा के रोहतक मंडल में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक के संदर्भ में एक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया किरोहतक मंडल में संचालित सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के विभिन्न पक्षों यथा-लक्ष्य प्राप्ति प्रबंधन समस्या,प्रबंधन एवं परिव्यय के प्रति सहभागी शिक्षक विशेष दृष्टिकोण नहीं रखते हैं।


प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण में आ रही विसंगतियों का अध्ययन

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
को
पीएच०डी०(शिक्षाशास्त्र) उपाधि
की पूर्ति हेतु
प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध

निर्देशिका
डॉ०(श्रीमती) [illegible]
[illegible]

शोधार्थी
अनुराग सिंह
[illegible]

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के विभिन्न पक्षों पर विद्यालय परिक्षेत्र की सामाजिक आर्थिक स्थिति के आयाम छात्र नियमितता व सेवाएं तथा जागरूकता के संदर्भ में शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं पाया गया।

(9) अनुराग सिंह(2012)ने प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण में आ रही विसंगतियों के संदर्भ में एक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक शिक्षा के प्रत्येक पक्ष (शिक्षक-शिक्षिकाएं,

आभभावकगण,विद्यालयी प्रबधतत्र) 50प्रातेशत से आधक व्याक्तयो को कायक्रम को सपूण जानकारी नही थी।

प्राथमिक शिक्षा के प्रत्येक पक्ष के 85% व्यक्तियों को प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु चलाए गए कार्यक्रम के विषय में जानकारी नहीं थी परंतु मिलने वाली सुविधाओं के विषय में जानकारी अवश्य थी वह इस विषय में जागरूक थे।

प्राथमिक शिक्षा के क्रियान्वित कार्यक्रम के उद्देश्य प्राप्ति के मतों में सरकारी अभिलेखों के आंकड़ों तथा वास्तविक सर्वेक्षण के आंकड़ों में भिन्नता पाई गई है।


अम्बेडकरनगर जनपद में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति एवं समस्याओं का एक अध्ययन

147

शिक्षाशास्त्र विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच०डी०) उपाधि हेतु डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद में प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

निर्देशक :
डॉ० श्रीधर पाण्डेय
एम०ए० (भूगोल), एम०एड०, पी-एच०डी०
एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग)
हेमवतीनन्दन बहुगुणा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लालगंज, प्रतापगढ़ (उ०प्र०)

शोधार्थी :
अजय कुमार पाल
एम०ए० (प्राचीन इतिहास, हिन्दी)
एम०एड०, एम०फिल०

2013

(10) अजय कुमारपाल(2013) ने अंबेडकर नगर जनपद में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति एवं समस्याओं का एक अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक शिक्षकों के प्रति जन समुदाय का नजरिया बहुत सकारात्मक नहीं दिखा, क्योंकि समाज भी अल्प शिक्षा के कारण कुंठित सा दिख रहा है जबकि सर्व शिक्षा अभियान के और आर.टी.ई. एक्ट 2009 लागू होने के बाद प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ी है। इस दिशा में जन जागरूकता अभियानों में और तीव्रता लाने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

अपने पूर्ववर्ती अध्यापकों की तुलना में नए नवनियुक्त अध्यापक विद्यालयों में समय से आकर तथा अनियमितता रखते हुए नई कहानी लिख रहे हैं।

प्रशिक्षण में अनुभवों,नवाचारों तथा अपने प्रभावी शिक्षण एवं कुशल व्यवहार के कारण यह शिक्षक समाज में अपने को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

2.3 अध्ययन से संबंधित समाचार एवं लेख इत्यादि



www.jagran.com 17 जुलाई 2016 का प्रकाशन दैनिक जागरण कानपुर देहात जा

स्कूलों के लिए भी 'पाठशाला' है ये स्कूल

- सूर्य नमस्कार व योग के साथ शुरू होती हैं कक्षाएं
- समर्पित शिक्षक फैला रहे संस्कारवान शिक्षा का उजियारा

इस स्कूल में सूर्य नमस्कार व योग के साथ कक्षाएं शुरू होती हैं। यहां के समर्पित शिक्षक समय सारणी के अनुसार बच्चों को शिक्षक सहायक सामग्री की मदद से शिक्षा ग्रहण कराते हैं।यह विद्यालय अन्य विद्यालयों के लिए मॉडल प्रेरक है।

कानपुर संस्करण,दैनिक जागरण17 जुलाई 2016, स्कूलों के लिएभी 'पाठशाला' है ये स्कूल शीर्षक से प्रकाशित किया गया।

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

संबंधित साहित्य के अध्ययन एवं चिन्तन से यह स्पष्ट होता है कि इनके शोध प्रमाण प्रस्तुत अध्ययन के अनुसंधान अभिकल्प के निर्माण के लिए आधार प्रदान करते हैं। शिक्षा ही ऐसा हथियार है जिसमें वांछित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक वातावरण में सुधार किया जा सकता है। उल्लिखित अध्ययन की समीक्षा के आधार पर एवं समाचार पत्र के आधार पर शोधकर्ता ने पाया कि प्राथमिक विद्यालय के पुनर्निर्माण एवं शिक्षा नीति के बदलाव की अत्यंत आवश्यकता है। प्राथमिक विद्यालयों पर तो बहुत सारे शोध हुए हैं परंतु उसकी अनुकरणीय पहल के लिए कोई शोध नहीं हुआ है। कानपुर देहात जनपद के कतिपय परिषदीय विद्यालय तो ऐसे हैं जिनका शैक्षिक पर्यावरण, भवन, विद्यालय की भौतिक सुविधाएँ निजी विद्यालयों से भी अधिक आकर्षक हैं। इन विद्यालयों की अनुकरणीय पहल काफी सराहनीय है। शोधकर्ता का ऐसा विश्वास है कि –"कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय एक अध्ययन" विषय पर किया गया शोध कार्य अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

तृतीय अध्याय

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान, आकल्पन अनुसंधान की एक ऐसी संरचना या योजना है, जिसे अनुसंधान प्रश्नों के उत्तर प्राप्ति के लिए प्रस्तुत किया जाता है| यह आकल्पन अध्ययन के संचालन हेतु प्रयुक्त विधियों का विवरण प्रस्तुत करता है, जिसके अन्तर्गत कब, कहाँ किन दशाओं में प्रदत्त प्राप्त किया जायेगा इसका उल्लेख होता है| दूसरे शब्दों में अनुसंधान आकल्पन इंगित करता है, कि किन विषयों पर किस प्रकार अनुसंधान सम्पन्न किया जाता हैतथा प्रदत्त संकलन के लिये किन विधियों का प्रयोग किया जाता है| किसी भी कार्य को पूरा कर लेने के लिये उसकी पूर्व योजना बना लेना उचित होता है, जिससे न केवल कार्य में लगने वाला श्रम, धन, समय में मितव्ययता आती है, वरन् कार्यों में भी वृद्धि होती है| अनुसंधान अकल्पना के अभाव में शोध कार्य अभियोजित, विचारहीन तथा उस भटके राही की भांति है, जो अपने लक्ष्य तक पहुँचाने के साधन तथा मार्गों से अनभिज्ञ होता है| वैज्ञानिक शोध की प्रक्रिया के तीसरे सोपान में शोध प्रारूप तैयार किया जाता है| शोध की रूपरेखा, नियोजन को शोध प्रारूप कहते हैं, जो न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है|

3.2 शोध विधि

प्रस्तुत समस्यात्मक शोध में वर्णनात्मक विधि के अन्तर्गत केस अध्ययन का भी प्रयोगकिया जाता है, क्योंकि इतिहास किसी भी क्षेत्र में अतीत की घटनाओं का एकीकृत वर्णन है|

वर्तमान की समस्याओं को हल करने के लिए, अतीत के अनुभवों से लाभ उठाना ऐतिहासिक अनुसंधान की उपयोगिता का तर्क संगती प्रदान करता है| अतीत केवल अतीत ही नहीं वर्त्तमान को समझने की कुंजी है|

वर्णनात्मक अनुसंधान विधि

शिक्षा तथा मनोविज्ञान सम्बन्धी अनुसंधान के क्षेत्र में वर्णनात्मक अनुसंधान का सबसे अधिक महत्व है और यह बड़ेव्यापक रूप में व्यवहार में आता है|

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार, "वर्णनात्मक अनुसंधान"क्या है?, का वर्णन एवं विश्लेषण करता है| परिस्थितियों अथवा सम्बन्ध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास, विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जोपाई जा रही हैं, प्रक्रियाएँ जो चल रही हैं, अनुभव जो प्राप्त किये जा रहे हैं अथवा नई दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं, उन्हीं से इसकासम्बन्ध है|

केस अध्ययन विधि

इस प्रकार का अवलोकन अनुसंधान किसी व्यक्ति या उनके व्होते समूह के अध्ययन पर आधारित होता है| इस मामलेमें, हम अध्ययन के विषयों के विभिन्न अनुभवों और व्यवहारों के बारे में गहराई से जाँच करते हैं|

3.3 अध्ययन समाष्टि

अध्ययन जनसंख्या से तात्पर्य अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वांछित निरीक्षणों से सम्बन्धित ईकाइयों की कुल संख्या से है| वर्तमान अध्ययन के संदर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिसमें वांछित सूचनाएं संकलित करनी है वह है-कानपुर देहात जनपद के परिषदीय विद्यालय में 5 विद्यालय अनुकरणीय पाए गए|

जनपद कानपुर देहात में कुल 1925 परिषदीय विद्यालय हैं, जिसमें प्राथमिक विद्यालय व उच्च प्राथमिक विद्यालय शामिल है|

प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 987, जिसमें 12 विद्यालय कानपुर देहात नगर क्षेत्र के हैं व 975 विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के शामिल है|

उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 447, जिसमें 7 विद्यालय कानपुर देहात नगर क्षेत्र के हैं व 440 विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के शामिल है|

जिसमें कुछ विद्यालय अनुकरणीय है जिनका चयन न्यादर्शके रूप में किया गया है जो निम्नलिखित हैं-

क्रं० सं०अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय

1 पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर, क्षेत्र–मलासा, कानपुर देहात

2 पी.एम.श्रीसंविलियन विद्यालय रोशनमऊ, क्षेत्र–अकबरपुर, कानपुर देहात

3 प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर, क्षेत्र–डेरापुर, कानपुर देहात

4 पी.एम.श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालयभदेसा, क्षेत्र–सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

5 संविलियन विद्यालय चाँदापुर, क्षेत्र–अमरौधा, कानपुर देहात

तालिका सूची: जनपद कानपुर देहात के ब्लॉक

क्रमसंख्या	ब्लॉक	कुलविद्यालयोंकीसंख्या	चयनितअनुकरणीयविद्यालयोंकीसंख्या
1	अमरौधा	263	01
2	रसूलाबाद	314	00
3	झींझक	107	00
4	संदलपुर	143	00
5	डेरापुर	134	01
6	अकबरपुर	197	01
7	मैथा	210	00
8	सरवनखेड़ा	225	01
9	मलासा	170	01
10	राजपुर	162	00

3.4 न्यादर्श

जनसंख्याका एक ऐसा लघु अंश होता है जो पूरीजनसंख्या का वास्तविक रूप में प्रतिनिधित्व करता है।अधिकांश शोध अध्ययन आदर्श आधारित ही होता है क्योंकि पूरी जनसंख्या पर अध्ययन करना ना तो व्यावहारिक है और ना वैज्ञानिक शुद्धता को दृष्टिगत रखकर संभव या वांछनीय है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कानपुर देहात जनपद के 5 अनुकरणीय परिषदीय विद्यालयों का चयन किया गया है।

3.4.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचित्ता

प्रस्तुत शोधमें अध्ययनके लिए कानपुर देहात जनपद का चयन किया गया है जो उत्तर प्रदेश के कानपुर का ही भाग है जो ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक परंपराओं,धार्मिक स्थलों एवं औद्योगीकरण के लिए प्रसिद्ध है परंतु शैक्षिक रूप से काफी पिछड़ा हुआ है।अतः शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य के लिए कानपुर देहात जनपद का चयन किया है।

शोधकर्ता कानपुर देहात जनपद के ग्राम बील्हापुर का मूल निवासी है। अतः सुविधा की दृष्टि से शोधार्थी ने कानपुर देहात जनपद का चयन किया है।

क्योंकि शोधार्थी कानपुर देहात जनपद का ही मूलनिवासी है। अतः उसकी नैतिक उत्तरदायित्व है कि वह पहले संबंधित जनपद की समस्या का अध्ययन करे।

3.4.2 न्यादर्श चयन

इस मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम,संभाव्यता पर आधारित न्यादर्श तथा द्वितीय,असंभाव्यता पर आधारित न्यादर्श।

• संभाव्य न्यादर्श

संभाव्यता पर आधारित न्यादर्श विधियां वे हैं जिनमें न्यादर्श से की इकाइयों के चुने जाने की संभावना एक जैसी या समान होती है। दूसरे शब्दों में न्यादर्श की इन इकाइयों को यादरक्षिता या संयोग के आधार पर चयन करने से है।

• असम्भाव्य न्यादर्श

इसके अंतर्गतन्यादर्श में शामिल की जाने वाली इकाइयों को शोधकर्ता अपनी सुविधा या स्वविवेक के अनुसार चुनता है जिनको लेने से उसके निर्णय एवं प्रयोजन के अनुसार नयादर्शकी प्रतिनिधित्व संबंधी विशेषता प्रभावी ढंग से बढ़ जाती है। इस प्रकार से प्राप्त आधार सामग्रियों के विश्लेषण में अप्राचलिकपरीक्षण का प्रयोग करना चाहिए। वस्तुत: न्यादर्श चयन का यह वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ तरीका नहीं है फिर भी अनेक शैक्षिक शोधकर्ता शोध की जटिलता एवं व्यवहारिक कठिनाइयों को देखते हुए इसका प्रयोग करते हैं।

- हिम कन्दुक न्यादर्श चयन विधि

इस न्यादर्श चयन विधि में शोधकर्ता सर्वप्रथम कुछ ऐसे सदस्यों की पहचान कर लेता है जिनमें शोध विषय से संबंधित गुण एवं विशेषताएं मौजूद हों। इसके बाद उन्हीं सदस्यों के माध्यम सेअन्य ऐसे सदस्यों को पहचान कर लेता है जिनमें वैसे ही गुण विद्यमान हैं। यह सिलसिला तब तक चलता रहता है जब तक अपेक्षित मात्रा में ऐसे गुणोंवाले अन्य सदस्य ना मिल जाएं। उदाहरण के लिए शोधकर्ता दो प्रतिभाशाली बालकों की पहचान कर लेने के बाद उन्हें दो प्रतिभाशाली बालकों के माध्यम से अपेक्षित मात्रा में अन्य प्रतिभाशाली बालकों की पहचान कर लेता है। इस प्रकार के न्यादर्शचयन को हिम कन्दुक न्यादर्श चयन विधि कहते हैं।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने हिमकन्दुक न्यादर्श चयन विधि द्वाराकानपुर देहात जिले के पांच अनुकरणीय परिषदीय विद्यालयों का चयन किया गया है।

3.5 शोध उपकरण

अनुसंधान केआँकड़ों का संकलन करने के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है।जिनके सहारे शोधकर्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है इन्हीं साधनों को उपकरण कहते हैं। अतः यदि उपकरणों को अनुसंधान का मूल कह दिया जाए तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि इनके अभाव में विभिन्न प्रदत्तों का संकलन संभव नहीं है।

प्रश्नावलियाँ,चेक लिस्ट, मापनी रेटिंग स्केल, मानकीकृत परीक्षण आदि ऐसे ही उदाहरण हैं। अनुसंधान के निर्धारित तथ्यों तक पहुंचने के लिए उपकरणों का चयन अनुसंधान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण सोपान है। यदि असावधानीवश प्रयुक्त उपकरण के चयन में गलती हो जाती है तो वांछित प्रदत्त प्राप्त करने में कठिनाई होगी। यह भी संभव है कि अनुसंधानकर्ता द्वारा उन लक्षण की प्राप्ति ही ना हो सके जिनके लिए यह कृति सुनिश्चित है। अनुसंधान की विभिन्न विधियोंके अनुसार उपकरणों की विविधता होती है क्योंकि अलग-अलग प्रकार की सूचनाएँ एकत्रित करने में अलग-अलग प्रकार के उपकरण प्रयोग में लाए जाते हैं।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने अवलोकन अनुसूची एवं साक्षात्कार अनुसूची शोध उपकरणों का प्रयोग किया है।

3.5.1 अवलोकन अनुसूची

इस अनुसूची का प्रयोग अवलोकन कर्ता कार्य को व्यवस्थित,क्रमबद्ध एवं प्रभावी बनाने में करता है। इसमें प्रश्न के स्थान पर सारणी का प्रयोग होता है। अतः प्रश्न रचना की जगह कुछ मोटी बातों का उल्लेख रहता है। जिसमें विषय के

अनुसार क्रमबद्ध रूप से घटी घटनाओ का अवलोकन कर्ता विवरण स्वयं देखकर लिखता है। यह विषय क्षेत्र को सीमित करने एवं आवश्यक तथ्य पर ध्यान देने में सहायक होती है।

3.5.2 साक्षात्कार अनुसूची

इस प्रकार की अनुसूचियां में सूचनाएँ प्रत्यक्ष साक्षात्कार के द्वारा एकत्र की जाती हैं।इसमें निश्चित क्रम में प्रश्न अथवा खाली सारणी दी हुई होती है,जिन्हें साक्षात्कार्यकर्ता सूचना उत्तर से पूछ कर भरता है। यह उत्तर उसके लिए तथ्य का कार्य करते हैं जिनका वह स्वयं समस्या के संदर्भ में विश्लेषण एवं वर्गीकरण करता है। इसके द्वारा विश्वसनीय एवं प्रमाणित सूचनाएँ प्राप्त होती हैं व्यक्तिगत संपर्क के कारण इसमें अनुसंधानकर्ता सूचना दाता को सूचना देने के लिए प्रेरित कर सकता है।

3.6 प्रदत्त संकलन

प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता ने स्थानीय शिक्षकों एवं अभिभावकों सेसंपर्क कर ऐसे किसी परिषदीय विद्यालय की जानकारी की अपेक्षा की जो सामान्य परिषदीय विद्यालयों से हटकर कुछ नवाचार कर रहे हों। शोधकर्ता को अपेक्षा के अनुरूप उच्च प्राथमिक विद्यालय पुलन्दर क्षेत्र मलासा कानपुर देहात के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। यह विद्यालयशोधकर्ता के गांव से मात्र 28 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अतःशोधकर्ता ने अपने एक मित्र के साथ विद्यालय में पहुंचकर अवलोकन किया और प्रधानाध्यापक श्री रामदास पाल, श्री शैलेंद्र कुमार सचान एवं अन्य अध्यापकों से साक्षात्कार किया।

प्रधानाध्यापक से वार्ता के दौरान उन्होंने पी.एम.श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ के बारे में जानकारी दी एवं वहाँ के प्रधानाध्यापक के संपर्क सूत्र भी प्रदान किया।

पी.एम.श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ के प्रधानाध्यापक जी से प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। वहाँ के अन्य अध्यापकों से सरवनखेड़ा के भदेसा में स्थित पीएम श्री संविलियन विद्यालय भदेसा के विषय में जानकारी मिली जहां शोधकर्ता ने अगले दिन पहुंचकर विद्यालय अवलोकन एवं प्रधानाध्यापक से साक्षात्कार किया।

पी.एम.श्री संविलियन विद्यालय भदेसा के प्रधानाध्यापक महोदय सेचर्चाके दौरान शोधकर्ता को संविलियन विद्यालय चाँदापुर के विषय में जानकारी मिली एवं वहाँ के प्रधानाध्यापक जी का संपर्क सूत्र भी प्राप्त हुआ।

संविलियन विद्यालय चाँदापुर जाने के लिए शोधकर्ता ने प्रधानाध्यापक से दूरभाष पर वार्ता की एवं अगले दिन वहाँपहुंचकर विद्यालय सर्वेक्षण किया तथा प्रधानाध्यापक जी से साक्षात्कार किया।

चतुर्थ अध्याय

कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय

4.1पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर, क्षेत्र- मलासा (कानपुर देहात)



स्थापना- 2006 ई0 **क्षेत्रफ़ल**–2500 वर्ग मीटर

इस गाँव का नाम पुलन्दर अत्यधिक तालाबों के कारण पड़ा।

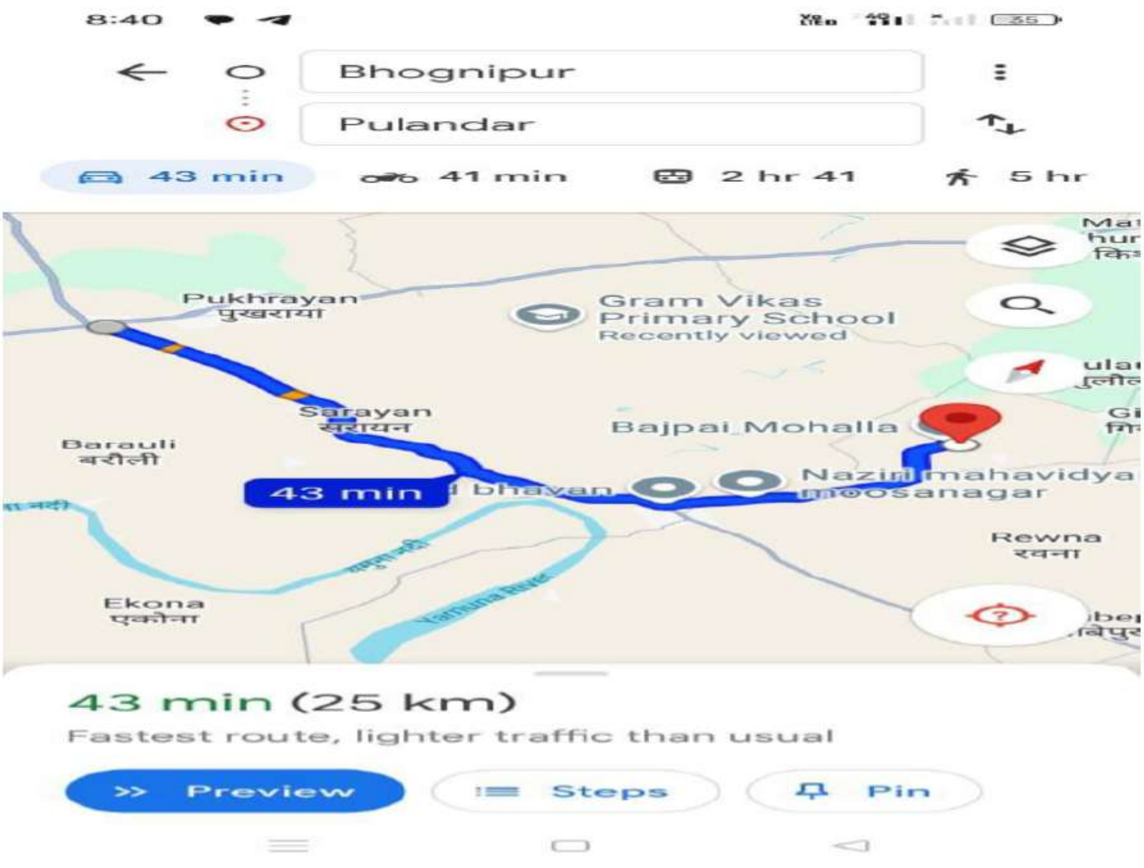
उद्देश्य

विद्यालय का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्र में निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना तथा छात्र एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास करना है।

विद्यालय का स्तर

यह विद्यालय बेसिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित पूर्व माध्यमिक विद्यालय जूनियर बेसिकस्कूल है। यहाँ कक्षा 6 से 8 तक की कक्षाएँ संचालित होती हैं।

भौगोलिक अवस्थिति



यह पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर क्षेत्र- मलासा (कानपुर देहात)गाँव में स्थित है। जो दिल्ली-कोलकाता राष्ट्रीय मार्ग NH-02 पर स्थित कस्बा मूसानगर से 9 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।

विद्यालय का वातावरण

विद्यालय का वातावरण शान्त एवं अध्ययन अध्यापन के अनुकूल है। विद्यालय गाँव के अंतिम किनारे पर एक तालाब के पास स्थित है।

शिक्षक विवरण

कोई भी शिक्षण संस्था बिना शिक्षकों के समर्पण के अपने शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकेगी शिक्षक विद्यालय की आत्मा होते हैं और वह अपनी मेहनत ज्ञान एवं त्याग से छात्र रूपी दीपक के मस्तिष्क रूपी वर्तिका को प्रज्वलित कर समाज को आलोकित करते हैं। पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर के शिक्षकों का विवरण तालिका संख्या में दर्शाया गया है-

तालिका संख्या-4.1

क्रमसंख्या	नाम	पद
1	श्री रामदास पाल	प्रधानाध्यापक
2	डॉ. शैलेन्द्र सचान	सहायक अध्यापक
3	श्रीमती हेमलता यादव	सहायक अध्यापिका
4	श्रीमती दिव्या द्विवेदी	सहायक अध्यापिका
5	श्री गणेश	अनुदेशक
6	श्रीमती हाशमी बेगम	अनुदेशक
7	श्री संजय यादव	अनुदेशक

विद्यालय का भवन

पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर का भवन सुन्दर व आकर्षक है।

विद्यालय कक्षा-कक्ष

किसी भी विद्यालय का जो मुख्य कार्य होता है वह उसके कक्षा कक्षों में ही संपन्न होता है। कोठारी आयोग ने अध्ययन कक्षाओंके महत्व के विषय में बताते हुए कहा है कि- "भारत के भविष्य का निर्माण उसके अध्ययन कक्षाओं में हो रहा है।

पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर में 5 अध्ययन कक्ष हैं जिनमें अध्यापक एवं छात्र छात्राएं पठन-पाठन कार्य करते हैं प्रत्येक कक्षा में एक श्यामपट्ट है। कक्षा कक्ष में मानक के अनुरूप खिड़कियां एवं रोशनदान हैं जिनसे शुद्ध हवा एवं उचित प्रकाश अंदर आता है।

पुस्तकालय

पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर में एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय है जिसमें बाल साहित्य ,गणित एवं विज्ञान से सम्बन्धित पुस्तकें हैं।



खेल का मैदान

महान दार्शनिक अरस्तु ने कहा है कि- "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।"

अत: एक आदर्श विद्यालय के पास अपने छात्रों को शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं स्फूर्ति रखने के लिए खेल के मैदान का होना नितान्त आवश्यक है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर के पास खेल का मैदान है



शौचालय-

पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दरमें बालक, बालिकाओं एंव दिव्यांगों के लिए पृथक-पृथक शौचालय की व्यवस्था है।



पेयजल की व्यवस्था

अभी तक हुए वैज्ञानिक शोधों से ज्ञात हुआ है कि पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहां पर जीवन है और वह भी इसलिए क्योंकि पृथ्वी पर जल है। इसीलिए कहा भी जाता है कि जल ही जीवन है। एक आदर्श विद्यालय में छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों के लिए उचित पेयजल व्यवस्था अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। प्राथमिक विद्यालय खम्हौरा में पेयजल व्यवस्था के लिए फ्रीजर एवं सबमर्सिबल है।





विद्यालय की उपलब्धियाँ

छात्र-उपलब्धियाँ:- किसी भी विद्यालय की प्रगति वहां अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धियों द्वारा परिलक्षित होती है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दरकी वॉलीबाल टीम द्वीरा राज्य स्तर पर प्रतिभाग कर के द्वितीय स्थान प्राप्त किया गया और मंडल स्तर पर गोला फेंक चक्का फेंक एवं दौड़ में छात्रों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

शिक्षक उपलब्धियाँ:- पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर के सहायक अध्यापक श्री डॉ. शैलेन्द्र सचान को 5 सितंबर 2002 को माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश शासन ने 'राज्य अध्यापक पुरस्कार' से सम्मानित किया। शिक्षिका दिव्या द्विवेदी ने बताया कि यह पुरस्कार पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर को हर वह सुविधा उपलब्ध कराने के लिए एवं नामांकन में वृद्धि के लिए मिला है जो एक मॉडल विद्यालय के पास होनी चाहिए।

वातावरण एवं साज-सज्जा

विद्यालय के कक्षा-कक्षों की दीवारों पर शैक्षिक विषय वस्तु एवं अन्य आकर्षक चित्र बनाए गए हैं। विद्यालय के मुख्य द्वार के पास की बाउंड्री वॉल पर अंदर की तरफ समुद्र में तैरती सील का चित्र अत्यंत आकर्षक एवं मनोहारी है। जिसे विद्यालय की सहायक अध्यापिका ने ही बनाया है।

हरीतिमा स्थिति

विद्यालय में हरीतिमा की स्थिति औसत दर्जे की है। विद्यालय के अंदर स्थान की कमी के कारण वहां अधिक पौधे लगाए भी नहीं जा सकते।

उपचारात्मक कक्षाएँ

प्रधानाध्यापक जी ने बताया कि हम सत्र की शुरुआत में छात्रों का निदानात्मक परीक्षण करते हैं फिर उनकी कठिनाई स्तर के अनुसार समूह बना लेते हैं और अलग-अलग समूहों को अलग-अलग शिक्षक उन्हें उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करते हैं।

दिव्यांगों के लिए सुविधाएँ

उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में चल रही योजना 'कायाकल्प' के तहत सभी विद्यालयों में रैम्प बनवाने के निर्देश दिए गए हैं।पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर में दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के लिए रैम्प एवं सुलभ शौचालय की उचित व्यवस्था है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ छात्रों के द्वारा ग्रहण किए गए सैद्धांतिक ज्ञान को पुष्ट करने का सशक्त माध्यम होती हैं।पूर्व माध्यमिक विद्यालय पुलन्दर में छात्र-छात्राओं को इस अभिकल्प के तहत, पेंटिंग, हस्तशिल्प, मिट्टी का कार्यएवंअन्य सांस्कृति



4.2 पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊअकबरपुर कानपुर देहात



स्थापना-1995 ई0

उद्देश्य

किसी भी शैक्षिक संस्था के अपने कुछ उद्देश्य होते हैं जिनके आधार पर वह दिन प्रतिदिन अपनी प्रगति की समीक्षा करके अपने कार्य को दिशा देते हैं।पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विद्यालय है क्योंकि यह एक सरकारी विद्यालय है अतः इसका उद्देश्य समाज के साधारण बच्चों के साथ साथ उन गरीब पिछड़े एवं वंचित बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराना है जो निजी विद्यालयों का शुल्क वहन नहीं कर सकते।

विद्यालय का स्तर

यह विद्यालय बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित है, जिसमें कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाएं संचालित होती हैं।

भौगोलिक अवस्थिति

पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ अकबरपुर रूरा संपर्कमार्ग (तिगाई) से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है,यह विद्यालय कानपुर देहात जनपद के अकबरपुर ब्लाक केरोशनमऊ ग्राम में स्थित है।

विद्यालय का वातावरण

विद्यालय का वातावरण अत्यधिक शांत मनोरम एवं हरीतिमा से परिपूर्ण है। विद्यालय का प्रांगण काफी साफ सुथरा एवं व्यवस्थित है। विद्यालय के मुख्य भवन के सामने कतारों में छोटी-छोटी क्यारियों में सजावटी फूलों के पौधे लगाए गए हैं। वही बाउंड्री वाल के साथ साथ विद्यालय के अंदर नींबू ,जामुन एवं अन्य पौधे लगे हुए हैं।

शिक्षक विवरण

कोई भी शिक्षण संस्था बिना शिक्षकों के समर्पण के अपने शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकेगी शिक्षक विद्यालय की आत्मा होते हैं और वह अपनी मेहनत ज्ञान एवं त्याग से छात्र रूपी दीपक के मस्तिष्क रूपी वर्तिका को प्रज्वलित कर समाज को आलो

कित करते हैं। पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ के शिक्षकों का विवरण तालिका में दर्शाया गया है-

क्रमसंख्या	नाम	पद
1	श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय	प्रधानाध्यापक
2	श्री राज कुमार	सहायक अध्यापक
3	श्री वीरेन्द्र कुमार	सहायक अध्यापक
4	श्री प्रताप भानु सिंह गौर	सहायक अध्यापक
5	श्री विकास द्विवेदी	सहायक अध्यापक
7	श्रीमती संगीता एम.	सहायक अध्यापक
8	श्री शिव कुमार साहू	सहायक अध्यापक
9	श्री विजय पाल	सहायक अध्यापक
10	श्री गौतम मिश्रा	खेल अनुदेशक
11	श्री हफीज अली	कला अनुदेशक
12	श्रीमती अंजू गुप्ता	कलाअनुदेशक
13	नरेन्द्र सिंह यादव	शिक्षामित्र
14	श्री दीपक वर्मा	शिक्षामित्र

विद्यालय का भवन

पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ का भवन काफी बड़ा एवं शानदार है। विद्यालय की बाउंड्री वाल के अंदर ही प्राथमिक विद्यालय भी स्थित है,वर्तमान में यह दोनों विद्यालय संविलयित हो चुके हैं।

विद्यालय कक्षा-कक्ष

किसी भी विद्यालय का जो मुख्य कार्य होता है वह उसके कक्षा कक्षों में ही संपन्न होता है। कोठारी आयोग ने अध्ययन कक्षों के महत्व के विषय में बताते हुए कहा है कि- "भारत के भविष्य का निर्माण उसके अध्ययन कक्षाओं में हो रहा है।



पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ में 6 अध्ययन कक्ष हैं जिनमें अध्यापक एवं छात्र छात्राएं पठन-पाठन कार्य करते हैं प्रत्येक कक्षा में एक श्यामपट्ट है। कक्षा कक्ष में मानक के अनुरूप खिड़कियां एवं रोशनदान हैं जिनसे ताजी हवा एवं उचित प्रकाश अंदर आता है।

पुस्तकालय

पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ में एक पुस्तकालय है जिसमें बाल साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकें हैं।

खेल का मैदान

महान दार्शनिक अरस्तु ने कहा है कि- "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।"

आतः एक आदर्श विद्यालय के पास अपने छात्रों को शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं स्फूर्ति रखने के लिए खेल के मैदान का होना नितान्त आवश्यक है। पूर्व माध्यमिक विद्यालय बरेहण्डा के पास खेल का शानदार मैदान है जिसमें छात्र एवं छात्राएँ कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट एवं अन्य खेल खेलते हैं। बरसात के दिनों में जलभराव हो जाता है जिससे छात्रों को खेलने में बहुत समस्याएं होती हैं।



शौचालय

पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ में बालक, बालिकाओं एवं दिव्यांगों के लिए शौचालय की व्यवस्था है।

पेयजल की व्यवस्था

अभी तक हुए वैज्ञानिक शोधों से ज्ञात हुआ है कि पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहां पर जीवन है और वह भी इसलिए क्योंकि पृथ्वी पर जल है। इसीलिए कहा भी जाता है कि जल ही जीवन है। एक आदर्श विद्यालय में छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों के लिए उचित पेयजल व्यवस्था अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ में पेयजल व्यवस्था के लिए एक इंडिया मार्का हैंडपम्प लगा हुआ हैतथा एक पानी की टंकी रखी हुई है जिसमें एक पाइप लगी है और पाइप के दोनों तरफ चार चार टोटियाँ लगी हुई हैं और एक टोंटी नीचे लगी हुई है जिसमें दिव्यांग छात्र भी आसानी से पानी पी सके।



विद्यालय की उपलब्धियाँ

पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊकानपुर देहात जनपद के नवाचारी विद्यालयों में शुमार किया जाने वाला प्रमुख विद्यालय है। विद्यालय के एक छात्र साहिल का चयन विद्या ज्ञान स्कूल परीक्षा 2023 में हुआ तथा राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा 2024में पाँच छात्र चयनित हुए।

वातावरण एवं साज-सज्जा



पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ की दीवारों पर शैक्षिक विषय वस्तु विभिन्न विषयों के जागरूकता स्लोगन प्रकृति चित्रण तथा साफ सफाई से संबंधित चित्रों को बनाया गया है।
विद्यालय के अध्ययन कक्षा में सभी राष्ट्रपतियों प्रधानमंत्रियों तथा मुख्यमंत्रियों के चित्र कालक्रम के अनुसार फ्लेक्सी पर लगाए गए हैं। विद्यालय में छोटे सजावटी तथा बड़े फलदार एवं सजावटी पौधे लगाए गए हैं जिनमेंगेंदा,गुलाब, सदाबहार, गुलदाऊदी एवं कनेर आम अमरूद आदि हैं।

हरीतिमा स्थिति

पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ में हरीतिमा की स्थिति बहुत अच्छी है। छोटे बड़े सजावटी तथा फलदार पेड़ पौधे जैसे आम नीम अशोक आमला नींबू अमरूद गुड़हल गुलाब अपराजिता तुलसी आदि के पौधे विद्यालय प्रांगण में लगे हुए हैं। जो विद्यालय के वातावरण को केवल सुंदर ही नहीं बनाते अपितु छात्र एवं अध्यापकों को प्रदूषण मुक्त वातावरण उपलब्ध कराकर उनके मन को प्रसन्न करके उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाने का काम करते हैं।



उपचारात्मक कक्षाएँ

शैक्षिक सत्र के शुरुआत में प्रत्येक विषय के छात्र अपने छात्रों का एक निदानात्मक परीक्षण करते हैं जिसके आधार पर वह उनकी कमियों को जांच कर उनका उपचारात्मक शिक्षण करते हैं जिसमें अध्यापक नवाचार एवं परंपरागत दोनों प्रकार विधियों का अपने शिक्षण कौशलों के अनुसार प्रयोग करते हैं।

दिव्यांगों के लिए सुविधाएँ

उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में चल रही योजना 'कायाकल्प' के तहत सभी विद्यालयों में रैम्प बनवाने के निर्देश दिए गए हैं।पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय रोशनमऊ में दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के लिए रैम्प एवं सुलभ शौचालय की उचित व्यवस्था है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ वास्तविक जीवन की तैयारी होती है। जिनसे छात्र जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को समझ कर उनमें सामंजस्य बिठाना सीखते हैं।पी.एम. श्री संविलियन विद्यालय

रोशनमऊ में छात्र छात्राओं को ब्लू वर्ल्ड कानपुर,नानाराव संग्रहालयबिठूर और चिड़ियाघर कानपुरआदि शैक्षिक स्थानों के भ्रमण करवाए जाते हैं।

4.3 प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर कानपुर देहात



स्थापना-1988-89**ई0** **क्षेत्र फल**- 4000 वर्ग मीटर

उद्देश्य

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर कानपुर देहात का प्रमुख उद्देश्य समाज के पिछड़े एवं वंचित तबके अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों तथा विशेषकर छात्राओं नि:शुल्क रोजगारपरक शिक्षा देकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ना है।

विद्यालय का स्तर

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर कानपुर देहात बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त प्राथमिक विद्यालय है।जिसे उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 1989 से अनुदान प्राप्त है। इस प्रकार यह एक परिषदीय विद्यालय है जिसमें कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाएँ संचालित होती हैं।

भौगोलिक अवस्थिति

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर कानपुर देहात जिले के डेरापुरजाने वाले मार्ग पर स्थित ग्राम गलुआपुर में स्थित है। यह विद्यालय डेरापुर से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।



विद्यालय का वातावरण

विद्यालय का वातावरण अत्यंत रमणीय शांत एवं मनोरम है। विद्यालय प्रांगण में नीम, अशोक, शीशम. सहजन, हरसिंगार,तुलसी,एलोवेरा व चिल्ला ,आदि पौधे लगे हुए हैं।विद्यालय में अनेक प्रकार के सजावटी एवं फूल वाले पौधे जैसे गुड़हल, गुलाब ,चमेली आदि लगे हुए हैं।



शिक्षक विवरण

कोई भी शिक्षण संस्था बिना शिक्षकों के समर्पण के अपने शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकेगी शिक्षक विद्यालय की आत्मा होते हैं और वह अपनी मेहनत ज्ञान एवं त्याग से छात्र रूपी दीपक के मस्तिष्क रूपी वर्तिका को प्रज्वलित कर समाज को आलोकित करते हैं।प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर कानपुर देहात के शिक्षकों का विवरण तालिका संख्या में दर्शाया गया है-

क्रमसंख्या	नाम	पद
1	सुश्रीसंगीता यादव	प्रधानाध्यापिका
2	श्रीमतीसाधना देवी	सहायकअध्यापिका
3	श्रीमतीपूनम पाण्डेय	सहायकअध्यापिका
4	श्रीमतीआकांक्षा त्रिपाठी	सहायकअध्यापिका
5	श्रीमती दीक्षा मिश्रा	सहायकअध्यापिका
6	श्री ज्ञानबाबू	सहायक अध्यापक
7	श्री रीतेश गौतम	सहायक अध्यापक
8	श्रीमती सरिता देवी	शिक्षामित्र

विद्यालय का भवन

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर कानपुर देहात का विद्यालय भवन काफी आकर्षक शानदार एवं विशाल है।

विद्यालय कक्षा-कक्ष

विद्यालय के कक्षा कक्ष सुनियोजित सुव्यवस्थित कंप्यूटर एवं संचार माध्यम के साधनों से परिपूर्ण एवं स्मार्ट बोर्ड युक्त है। कक्षा कक्षों में कंप्यूटर परिचय पत्र भी लगे हुए हैं जिनके द्वारा कठिन एवं अमूर्त विषयों को छात्रों को सहजता पूर्वक समझाया जा सकता है।

पुस्तकालय

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर में एक उन्नत पुस्तकालय है जिससे छात्र एवं छात्राएं अपने विषय वस्तु से संबंधित पुस्तकें एवं पत्र पत्रिकाएं प्राप्त कर अपने अध्ययन को सुचारू रूप से समृद्ध करते रहते हैं।





खेल का मैदान

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर के विद्यालय प्रांगण में एक विशाल खेल का मैदान है जिसमें छात्र एवं छात्राएं कबड्डी खो-खो टेबल टेनिस रस्साकसी क्रिकेट वालीबाल हांकी एवं बैडमिंटन खेलते हैं।



शौचालय

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर में बालक एवं बालिकाओं के लिए प्रथक-प्रथक शौचालय की व्यवस्था है।

पेयजल की व्यवस्था

जल ही जीवन है। शीतल एवं स्वच्छ पेयजल शरीर के लिए अति आवश्यक है यह अपने आप में कई औषधियों के गुण रखता है तथा बहुत सारे रोगोंको नष्ट करने में सक्षम है जल के अभाव में हमारे शरीर की कोशिकाएं टूटने लगती हैं फलत: कई जानलेवा बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं।

पेयजल के महत्व को समझते हुए भीप्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर में शीतल जल आपूर्ति के लिए जल शीतलक लगा हुआ है, जिनसे छात्र-छात्राएं एवं अध्यापक पेयजल ग्रहण करते हैं।

विद्यालय की उपलब्धियाँ

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर लगातार सात वर्षों से (2016-23) तक जनपद स्तर पर खेलों में सर्वोत्तम स्कूलों में स्थान रखता है।

यह विद्यालय अपने छात्रों को व्यावसायिक एवं सैद्धांतिक दोनों प्रकार की शिक्षा पूर्णत: निशुल्क उपलब्ध कराता है।

विद्यालय के सभी छात्रों को निशुल्क गणवेश सर्दियों में गर्म कपड़े स्वेटर इन गुलबंद आदि प्रदान करता है।

शिक्षण कार्य को रोचक एवं प्रभावी बनाने के लिए प्रतिवर्ष अध्यापक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन जिसमें विषय विशेषज्ञ आकर अध्यापकों को अध्यापन के नवाचारी तरीके से सिखाते हैं।

वातावरण एवं साज-सज्जा

विद्यालय शहर के कोलाहल से दूर सुरम्य में प्रकृति की गोद में स्थित है। विद्यालय के अंदर लगे हुए फलदार एवं सजावटी पौधे इसकी सुंदरता में चार चांद लगाते हैं। विद्यालय का आकर्षक एवं शानदार भवन सजे हुए व्यवस्थित कक्षा कक्ष अनायास ही सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

हरीतिमा स्थिति

विद्यालय की हरीतिमा स्थिति बहुत अच्छी है।

इसके चारों तरफ फलदार वृक्ष आम ,अमरूद, केला, मौसमी ,आंवला, करौंदा तथा सजावटी पौधे गुड़हल,चमेली, गुलाब एवं हरसिंगार आदि लगे हुए हैं।



उपचारात्मक कक्षाएँ

विद्यालय में छात्रों की आवश्यकता अनुसार उपचारात्मक कक्षाएं भी लगती हैं।प्रातः 1 घंटा उपचारात्मक कक्षाएं हिंदी एवं गणित में संचालित होती है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

प्राथमिक विद्यालय गलुआपुर क्षेत्र डेरापुर सैद्धांतिक एवं व्यवसायिक विषयों के साथ-साथ अपने छात्रों के लिए विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संचालन भी करता है जिनमें से प्रमुख छात्रों के लिए निशुल्क कानपुर, आगरा, मथुरा, वृन्दावन और चित्रकूट आदि स्थानों का शैक्षिक भ्रमण, वार्षिक समारोह के रूप में बाल दिवस जिसमें पीटी पिरामिड आसन लोक नृत्य राष्ट्रीय गीत प्रहसन एकांकी नाटक का प्रदर्शन आदि प्रमुख हैं।

4.4 पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा क्षेत्र-सरवनखेड़ा



स्थापना-2000 ई0 क्षेत्रफल- 3बीघा

इस ग्राम का उल्लेख रामायण में मिलता है, इस ग्राम पंचायत में 2 गांव आते है-भदेसा और शीतलपुर।

उद्देश्य

विद्यालय का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्र में निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण एवं अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान करना तथा छात्र एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास करना है।

विद्यालय का स्तर

यह विद्यालय बेसिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय जूनियर बेसिक स्कूल है। यहाँ कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाएँ संचालित होती हैं।

भौगोलिक अवस्थिति

यह विद्यालय कानपुर देहात जिले के सरवनखेड़ा ब्लॉक में नबीपुर मार्ग से 19 किलोमीटर दूरी पर स्थित है।



विद्यालय का वातावरण



पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा गांव के बाहर एक किनारे पर स्थित है जो गांव से दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थित विद्यालय है जहां का वातावरण अध्ययन एवं अध्यापन के लिए सर्वथा अनुकूल है।

शिक्षक विवरण

क्रमसंख्या	नाम	पद
1	श्री जफर अख्तर	प्रधानाध्यापक
2	श्रीमती शशि प्रभा सचान	सहायक अध्यापिका
3	श्रीमती परिधि यादव	सहायक अध्यापिका
4	श्रीमती अनीता राय	सहायक अध्यापिका
5	श्री राजेश सिंह	सहायक अध्यापक
6	श्रीयोगेंद्र कुमार	सहायक अध्यापक
7	श्री अनुभव कुमार गौतम	सहायक अध्यापक
8	श्रीमती संगीता सिंह	शिक्षामित्र
9	श्री रूपनारायण अवस्थी	शिक्षामित्र
10	श्री राहुल सिंह राठौड़	अनुदेशक

विद्यालय का भवन

पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा का भवन ज्यादा बड़ा तो नहीं है परंतु यह काफी आकर्षक एवं व्यवस्थित ढंग से बना हुआ है।



विद्यालय कक्षा-कक्ष

पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा में मुख्य भवन के साथ 3 अतिरिक्त कक्षा कक्ष हैं। वायु एवं प्रकाश के आने का उचित प्रबंध है प्रत्येक कक्ष में ब्लैक बोर्ड है तथा अन्य आवश्यक सहायक सामग्री के रखने की व्यवस्था भी है।

पुस्तकालय

पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा के पास अपना एक छोटा सा पुस्तकालय भी है जिसमें बाल साहित्य से संबंधित पुस्तकें एवं पत्र पत्रिकाएं तथा शैक्षिक विषय वस्तु पर आधारित पत्र पत्रिकाएं तथा पुस्तके उपलब्ध हैं।

शौचालय

पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा में बालक एवं बालिकाओं के लिए अलग-अलग शौचालय की व्यवस्था भी है।

पेयजल की व्यवस्था



पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा में एक इंडिया मार्का हैंडपंप लगा हुआ है जिसके साथ ही सबमर्सिबल भी संयोजित है, जिससे विद्यालय के छात्र छात्राएं एवं अध्यापक पेयजल ग्रहण करते हैं।

विद्यालय की उपलब्धियाँ

पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसाके दो शिक्षकों क्रमशः श्री जफर अख्तर जी (2016 में)तथा श्रीमती शशि प्रभा सचान जी(2018 में)कोराज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

वातावरण एवं साज-सज्जा

विद्यालय का भवन मानक रंगों से पुता हुआ है अंदर की दीवारों पर महापुरुषों, वैज्ञानिको तथा स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों की फ्लेक्सी लगी हुई है विद्यालय के सूचना बोर्ड पर प्रतिदिन उपस्थित अनुपस्थित तथा पंजीकृत छात्रों के विवरण को लिखा जाता है।



हरीतिमा स्थिति

पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा के पास विद्यालय के अंदर स्थान की कमी है फिर भी उपलब्ध स्थान पर बरगद,नीम ,पीपल,कनेर,गुड़हल गुलाब पपीता तथा केले के पौधे लगाए गए हैं।



उपचारात्मक कक्षाएँ

पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा में उपचारात्मक कक्षाएं चलाई जाती हैं, जिनमें छात्रों के धनात्मक परीक्षण के बाद छात्रों को पांच पांच छात्रों के समूह में बांट दिया जाता है। इन छात्रों में एक छात्र औसत एक प्रतिभाशाली तथा 2 पिछड़े छात्रों को रखा जाता है। जो

आपस में अंतः क्रिया द्वारा अपनी समस्याओं का हल ढूंढते हैं तथा बीच-बीच में अध्यापक उन्हें मार्गदर्शन देते रहते हैं।

दिव्यांगों के लिए सुविधाएँ

उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में चल रही योजना 'कायाकल्प' के तहत सभी विद्यालयों में रैम्प बनवाने के निर्देश दिए गएपी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा में दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के लिए रैम्प एवं सुलभ शौचालय की उचित व्यवस्था है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ छात्रों के द्वारा ग्रहण किए गए सैद्धांतिक ज्ञान को पुष्ट करने का सशक्त माध्यम होती हैं। पी. एम. श्री संविलियन उच्च प्राथमिक विद्यालय भदेसा में छात्र-छात्राओं को इस अभिकल्प के तहत, पेंटिंग, हस्तशिल्प, मिट्टी का कार्य एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया जाता है।

4.5संविलियनविद्यालयचाँदापुर क्षेत्र-अमरौधा (कानपुर देहात)



स्थापना-1989ई0 **क्षेत्रफ़ल**- 20757 वर्ग फुट

उद्देश्य

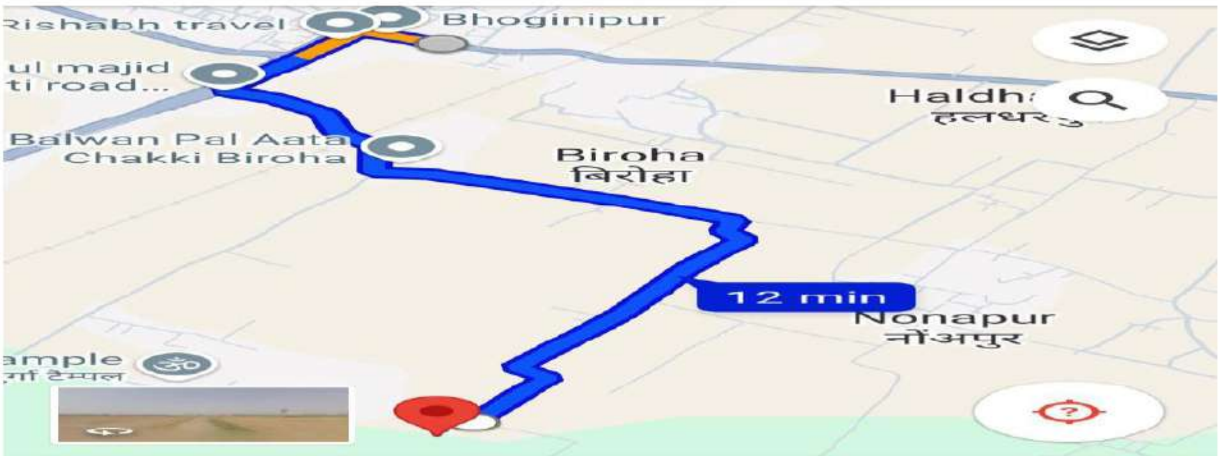
किसी भी शैक्षिक संस्था के अपने कुछ उद्देश्य होते हैं जिनके आधार पर वह दिन प्रतिदिन अपनी प्रगति की समीक्षा करके अपने कार्य को दिशा देते हैं। संविलियन विद्यालय चाँदापुर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित विद्यालय है क्योंकि यह एक सरकारी विद्यालय है अतः इसका उद्देश्य समाज के साधारण बच्चों के साथ साथ उन गरीब पिछड़े एवं वंचित बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराना है जो निजी विद्यालयों का शुल्क वहन नहीं कर सकते।

विद्यालय का स्तर

यह विद्यालय बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालय (अपर बेसिक स्कूल) है जिसमें कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाएं संचालित होती हैं।

भौगोलिक अवस्थिति

संविलियन विद्यालय चाँदापुर कानपुर देहात जिले के भोगनीपुर से विरोहामार्ग पर 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।



विद्यालय का वातावरण

संविलियन विद्यालय चाँदापुर का वातावरण काफी शांत आकर्षक तथा अध्ययन अध्यापन की परिस्थितियों के लिए पूर्णत: अनुकूल है।



शिक्षक विवरण

कोई भी शिक्षण संस्था बिना शिक्षकों के समर्पण के अपने शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकेगी शिक्षक विद्यालय की आत्मा होते हैं और वह अपनी मेहनत ज्ञान एवं त्याग से छात्र रूपी दीपक के मस्तिष्क रूपी वर्तिका को प्रज्वलित कर समाज को आलोकित करते हैं। संविलियन विद्यालय चाँदापुर के शिक्षकों का विवरण तालिका संख्या में दर्शाया गया है-

क्र.स.	नाम	पद
1	श्री एजाज़ मुहम्मद	प्रधानाध्यापक
2	श्री चतुर्भुज	सहायक अध्यापक
3	श्रीमती तौसीफ अख्तर	सहायक अध्यापिका
4	श्रीमती संगीता	सहायक अध्यापिका
5	श्रीमती नेहा गौतम	सहायक अध्यापिका
6	श्रीमती रुकय्या खातून	सहायक अध्यापिका
7	श्री मुहम्मद आफाक	सहायक अध्यापक
8	श्री भूप सिंह	सहायक अध्यापक
9	श्रीमती अज़रा परवीन	सहायक अध्यापिका
10	श्री अजय कुमार	सहायक अध्यापक
11	श्री अमित सिंह यादव	सहायक अध्यापक
12	श्रीमती रचना यादव	सहायक अध्यापिका
13	श्रीमती ज्योत्सना गांधी	सहायक अध्यापिका
14	श्रीमती मानसी सचान	सहायक अध्यापिका
15	कु. रीना कुमारी	सहायक अध्यापिका
16	श्रीमती नीतू रानी	सहायक अध्यापिका
17	श्रीमती दीप्ति सचान	सहायक अध्यापिका
18	श्रीमती निधि पटेल	सहायक अध्यापिका

विद्यालय का भवन

संविलियन विद्यालय चाँदापुर का भवन काफी बड़ा एवं शानदार है। विद्यालय एक बहुत बड़े भूखंड पर फैला हुआ है। विद्यालय के पास एक बहुत बड़ा सभा-कक्ष भी है। विद्यालय भवन के अंदर ही संकुल कार्यालय भी स्थित है।

विद्यालय कक्षा-कक्ष

किसी भी विद्यालय का जो मुख्य कार्य होता है वह उसके कक्षा कक्षों में ही संपन्न होता है। कोठारी आयोग ने अध्ययन कक्षों के महत्व के विषय में बताते हुए कहा है कि- "भारत के भविष्य का निर्माण उसके अध्ययन कक्षाओं में हो रहा है।



संविलियन विद्यालय चाँदापुर में 6 अध्ययन कक्ष हैं जिनमें अध्यापक एवं छात्र छात्राएं पठन-पाठन कार्य करते हैं प्रत्येक कक्षा में एक श्यामपट्ट है। कक्षा कक्ष में मानक के अनुरूप खिड़कियां एवं

रोशनदान हैं जिनसे ताजी हवा एवं उचित प्रकाश अंदर आता है। कक्षा कक्ष की आंतरिक दीवारों पर शिक्षण विषय से संबंधित विषय वस्तु को रोचक तरीके से लिखा गया है।

पुस्तकालय

संविलियन विद्यालय चाँदापुर में एक छोटा सा पुस्तकालय भी है जिसमें उच्च प्राथमिक स्तर के विषयों से संबंधित पुस्तकें एवं अन्य बाल साहित्य से संबंधित पत्र पत्रिकाएं तथा पुस्तकें उपलब्ध है।

खेल का मैदान

संविलियन विद्यालय चाँदापुर के परिसर के अन्दर खेलने के लिए काफी बड़ा मैदान है,जिसमें छात्र एवं छात्राएँ विभिन्न प्रकार के खेल-कूद एवं शरीरिक गतिविधियाँ अपने खेल अनुदेशक की उचित देख-रेख में खेलते एवं सीखते हैं।

शौचालय



संविलियन विद्यालय चाँदापुर में पृथक पृथक शौचालय की व्यवस्था है।जिसकी साफ सफाई एवं देखरेख पर विद्यालय प्रबंधन विशेष ध्यान देता है।

पेयजल की व्यवस्था

संविलियन विद्यालय चाँदापुर में पेयजल आपूर्ति के लिए दो इंडिया मार्का हैंड पंप तथा एक पानी की टंकी लगी हुई है जिससे छात्र-छात्राएं तथा विद्यालय के शिक्षक पेय जल ग्रहण करते हैं।

विद्यालय की उपलब्धियाँ

संविलियन विद्यालय चाँदापुर कानपुर देहात जनपद के परिषदीय विद्यालयों में एक अलग ख्याति रखता है। इस विद्यालय में 5 किलोमीटर दूर से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते हैं।

वातावरण एवं साज-सज्जा



विद्यालय की साज-सज्जा आकर्षक है। विद्यालय भवन पर जगह-जगह साफ-सफाई स्कूल चलो अभियान तथा मतदान आदि से संबंधित जागरूकता श्लोगन लिखे हुए हैं। अध्ययन कक्षा के अंदर लगी हुई फ्लेक्सी पर भारत के प्रमुख राजनेताओं तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के चित्र लगे हुए हैं।

हरीतिमा स्थिति

विद्यालय की हरीतिमा स्थिति और औसत दर्जे की है। विद्यालय के अंदर काफी बड़ा मैदान है मुख्य भवन की दीवारों के एकदम साथ-साथ छोटी-छोटी क्यारियां बनाई गई हैं जिनमें गुड़हल गुलाब गेंदा तथा अन्य सजावटी पौधे लगे हुए हैं।



उपचारात्मक कक्षाएँ

शैक्षिक सत्र के शुरुआत में छात्र छात्राओं की कठिनाई स्तर के अनुसार उन्हें अलग-अलग समूहों में बांटकर उपचारात्मक कक्षाएं भी चलाई जाती हैं

दिव्यांगों के लिए सुविधाएँ

उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में चल रही योजना 'कायाकल्प' के तहत सभी विद्यालयों में रैम्प बनवाने के निर्देश दिए गए हैं। संविलियन विद्यालय चाँदापुर में दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के लिए रैम्प एवं सुलभ शौचालय की उचित व्यवस्था है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ वास्तविक जीवन की तैयारी होती है। जिनसे छात्र जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को समझ कर उनमें सामंजस्य बिठाना सीखते हैं। संविलियन विद्यालय चाँदापुर में छात्र छात्राओं को सुधांशु आश्रम बिठूर एवं चिड़ियाघर कानपुरआदि शैक्षिक स्थानों के भ्रमण करवाए जाते हैं।

पंचम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष

एक उत्तम शोधकार्य की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष शोध विधियों के सम्यक प्रयोग एवं तर्कसंगत व्याख्याओं पर आधारित होते हैं। उनमें वस्तुनिष्ठता होती है। वह अपने निष्कर्ष के द्वारा ही अपने शोध कार्य को अंतिम रूप प्रदान कर सकता है।ऐसाकहाजाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बिना निष्कर्ष के निकले शोध कार्य को अपूर्ण माना जाता है।

जिस प्रकार किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व उद्देश्यों की आवश्यकता होती है। बिना उद्देश्यों के कोई कार्य सफल नहीं माना जा सकता, ठीक उसी प्रकार शोध कार्य के पूर्ण हो जाने पर निष्कर्ष आवश्यक होते हैं और उन्हीं प्राप्त निष्कर्षों के माध्यम से ही शोध कार्य की शैक्षिक उपयोगिता के सम्बन्ध में आवश्यक सुझाव दिए जा सकते हैं-

- ❖ अधिकांश परिषदीय विद्यालयअनुकरणीय नहीं है क्योंकि विद्यालय में पर्याप्तसंसाधनो की कमी है।
- ❖ अधिकांश विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित जिससे विद्यालय में सभी सुविधाएँ नहीं उपलब्धहै।
- ❖ परिषदीय विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों अध्यापकों की कमी है।
- ❖ ग्रामीण क्षेत्रों में निजी विद्यालयों के खुलने की वजह से सरकारी विद्यालयों में पंजीकरणकमहैं।
- ❖ प्राथमिक विद्यालय का औसतन क्षेत्रफल (जमीन) बहुत कम है।विद्यालय में खुला क्षेत्र कम होने के कारण वृक्षारोपण कम किया जाता है।
- ❖ अधिकांश विद्यालयों में पर्याप्त जगह और पानी की व्यवस्था न होने के कारण किसी भी विद्यालय में वृक्ष नहीं है।
- ❖ किसी भी विद्यालय में सजावटी पौधों की संख्या नहीं है और औषधीय पौधे प्रति विद्यालय कम हैं।

- ❖ बेल/लता को लगाने के लिए सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी की आवश्यकता होती है साथ ही जानवरों से बचाने के लिए ऊँची एवं मजबूत चहारदीवारी की आवश्यकता होती है जो ज्यादातर विद्यालयों में नहीं है।
- ❖ प्रवेश द्वार की ऊँचाई औसतन कम है, जिसकी वजह से विद्यालयकमअनुकरणीय एवंकमसुन्दर है।
- ❖ एक आदर्श परिषदीय विद्यालय के संचालन के लिए संबंधित समुदाय का सहयोग बहुत जरूरी है।
- ❖ अधिकांश विद्यालयों में विद्यालय के अन्दर खेलने के मैदान की कमी है।
- ❖ अधिकांश विद्यालयों में पेयजल की आपूर्ति सही नहीं है।
- ❖ प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक शिक्षकों के प्रति जन समुदाय का नजरिया बहुत सकारात्मक नहीं दिखा क्योंकि समाज भी अल्प शिक्षा के कारण कुंठित सा दिख रहा है।

नव नियुक्त अध्यापक विद्यालयों में समय से आकर तथा अनियमितता रखते हुए नई कहानी लिख रहे हैं।

5.2 अध्ययन कीशैक्षिक उपादेयता

किसी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उसकी उपयोगिता पर निर्भर करती है।अनुकरण का महत्व इतना स्पष्ट है तब भी कुछ ही मुट्ठी भर लोग हैं जो वास्तव में इस गतिविधि में शामिल होने का प्रण लेते हैं। परिषदीय विद्यालय को अनुकरणीय बनाना शिक्षकों के लिए उपयोगी होता है, जिससे वह अनुकरणीय आदर्श विद्यालयों को बना सकें। अनुकरण कामहत्व प्राचीन समय से हैं, इसके पीछे सरल वाणी विनम्र व्यवहार एवं सौम्य वाणी मनोकामनाओं का आशीर्वाद देना ही अनुकरण का कर्तव्य है परन्तु इसके अध्ययन शिक्षक, छात्र और शिक्षाविद अन्य सभी वर्गों के लिए बहुत उपयोगी है।

अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि परिषदीय अनुकरणीय विद्यालयो की संख्या बहुत कम है जिससे लोग अपने बच्चों को परिषदीयविद्यालयो की अपेक्षा निजी विद्यालयों में प्रवेश दिलाते है इसके लिए गाँव के अभिभावकों एवं उनके पाल्यों को तथा ग्राम प्रधान और गाँव के प्रमुख व्यक्तियों को अनुकरण के सम्बन्ध में जागरूक करें और सभी लोगों से स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस पर तथा किसी विशेष त्योहार पर अनिवार्य रूप से अनुकरणीय कार्य कराना चाहिए।

अनुकरण का अध्ययन पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए उपयोगी है। एक प्रसिद्ध कहावत इस प्रकार है - "कल्पना कीजिए कि अगर पेड़ वाई-फाईसिग्नल देते तो हम कितने सारे पेड़ लगाते, शायद हम ग्रह को बचाते। बहुत दुख की बात है कि वे केवल ऑक्सीजन का सृजन करते हैं।" कितना दुखद है कि हम प्रौद्योगिकी के इतने आदी हो गए हैं कि हम अपने पर्यावरण पर होने वाले हानिकारक प्रभावों की अनदेखी करते हैं न केवल प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल प्रकृति को नष्ट कर रहा है। अगर हम वास्तव में जीवित रहना चाहते हैं और अच्छे जीवन यापन करना चाहते हैं तो अधिक से अधिक पेड़ लगाने जाने चाहिए और अपने गाँव नगर अपने राष्ट्र को हरित राज्य बनाने में सभी को योगदान देना चाहिए। इसका अध्ययन समस्त मानव के लिए उपयोगी है चाहे वह छात्र, शिक्षक, ग्राम प्रधान, ग्राम निवासी, विशिष्ट समुदाय, प्रशासन अथवा कोई अन्य क्यों नहो।

5.3 अध्ययन के सुझाव

किसी भी क्षेत्र में किया गया कोई भी शोध कार्य तब तक व्यर्थ है, जब तक उससे प्राप्त परिणाम उस क्षेत्र में काम ना आ सके। शोधकर्ता ने अपना शोध कार्य**"कानपुर देहात जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन"**को लेकर किया है। शोध कार्य में को लेकर किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में कानपुर देहात जनपद के परिषदीयविद्यालयों मेंअनुकरण का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि सभी विद्यालय अनुकरणीयविद्यालय नहीं हैं।

अनुकरणीयविद्यालयबनाने के लिए निम्नलिखित आदर्श सुझाव हैं-

5.3.1 प्रशासन हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में प्रशासन हेतु जो सुझाव दिये गये है उनको निम्न विन्दुओं द्वारा स्पस्ट किया जा सकता है -

- प्रशासन को चाहिए कि परिषदीय विद्यालय को अनुकरणीय बनाने के लिए अनुशासन जरूरी है।
- सभी विद्यालयों में पहुँच मार्ग पक्का की व्यवस्था करें, जिससे विद्यालय जाने का मार्ग बाधित ना हो।

- ❖ पीने के पानी के वितरण की सही व्यवस्था के साथ-साथ उसके संरक्षण एवं उसके व्यर्थ बहने को रोकने की सही व्यवस्था करे।
- ❖ शिक्षकों के साथ साथ कर्मचारियोंकी विद्यालय को अनुकरणबनाने के लिए नियुक्ति होनी चाहिए।
- ❖ विद्यालय में चहारदीवारी एवं परिसर प्रवेश द्वार की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे हरित पौधों को अन्ना जानवरों से बचाया जा सके।
- ❖ सरकार को विद्यालयों के बाहर, पीछे, अगल-बगल भी वृक्ष लगवाने चाहिए।।
- ❖ सरकार को सभी दिवसों में वृक्षारोपण करना अनिवार्य कर देना चाहिए।
- ❖ सरकार को विद्यालयों में अनुकरण से सम्बन्धित सभी संसाधनों की व्यवस्था करनी चाहिए।
- ❖ प्रत्येक परिषदीय विद्यालय में सफाई कर्मी और चौकीदार की नियुक्ति करनी चाहिए।

5.3.2 समाज हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में समाज हेतु जो सुझाव दिये गये है उनको निम्न विन्दुओं द्वारा स्पस्ट
किया जा सकता है -

- ❖ समाज के सभी लोग मिलकर यह शपथ ले कि सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों का पालन केवल दण्ड के भय से ना करके स्वेच्छा से करें।
- ❖ प्रत्येक व्यक्ति को अपने आस-पास घर में अनुकरणीयकार्योंको बढ़ावा देना चाहिए।
- ❖ प्रत्येक बच्चे के अभिभावक जब बच्चे का विद्यालय में प्रवेश दिलाने जाये तो अनुशासन का संकल्प जरूर ले।
- ❖ गाँव के प्रधान या नागरिक सरकारी विद्यालयों को सार्वजनिक सम्पति समझे और उनकी देखभाल में सहयोग प्रदान करें।

5.3.3 शिक्षकों हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों हेतु जो सुझाव दिये गये है उनको निम्न विन्दुओं द्वारा स्पस्ट किया जा सकता है -

- शिक्षकों को अनुकरणीय विद्यालय बनाने के लिए अभिभावको एवं समुदाय के सभी लोगों से विद्यालय की योजना निर्माण में सहभागिता लेनी चाहिए।
- शिक्षक को विभिन्न जयन्तियों/दिवसों में छात्रों को सम्बन्धित महापुरुष के संघर्ष एवं गुणों को बताकर उनका अनुकरण कराना चाहिये।
- शिक्षकों को चाहिए कि वृक्षारोपण के लिए वह छात्रों के साथ-साथ उनके अभिभावकों को भी प्रेरित करें तथा उसकी आवश्यकता के बारे में जानकारी दें।
- शिक्षक का कर्तव्य है कि वह अपने विद्यालय को अनुकरण विद्यालय बनाने के लिए हमेशा तत्पर रहे।

5.3.4 विद्यार्थियों हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों हेतु जो सुझाव दिये गये है उनको निम्न विन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

- अनुकरण के कार्यों को अपने जीवन में अपनाकर वे समाज का सहयोग करें।वृक्षों के महत्व को अन्य लोगों को समझाएँ स्वयं कचरा इधर-उधर ना फेंके।
- सीमित प्राकृतिक संसाधन-पानी, बिजली, कागज, लकड़ी एवं ईंधन आदि का सही एवं समुचित उपयोग करें।
- छात्र अपनी स्वेच्छा से विद्यालय में अनुकरणीय कार्य करें जिसकी पूर्वानुमति शिक्षकों से ले सकता है।
- छात्र अनुकरण विद्यालय बनाने में अपनी रुचि/सहयोग दे सकता है।
- प्रत्येक छात्र अपने जन्म दिवस के अवसर पर विद्यालय में कम से कम एक पौधा जरूर लगाएँ एवं उसकी समुचित देखभाल करें।
- छात्र अलग-अलग समूह बनाकर गांवों में जाकर, ग्रामवासियों को वृक्षारोपण के लाभ समझाएँ।

- ❖ छात्र अपने अभिभावक एवं माता-पिता को अनुकरण के विषय में जानकारी दें।
- ❖ छात्र विभिन्न समारोहों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा वृक्षारोपण के फायदे और नुकसान के बारे में नाटक प्रस्तुत करें।
- ❖ वृक्षों के नुकसान से जीव जन्तु एवं मनुष्य को नुकसान के बारे में लोगों को बताएं कि अगर पौधे जमीन पर नहीं होंगे तो प्राकृतिक सन्तुलन बिगड़ जाएगा जैसे बारिश का ना होना आज गम्भीर समस्या हो गई है।

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

- ❖ कानपुर देहात जिले के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश राज्य के अन्य जिलों में "कानपुर देहात जनपदके अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन"सेसम्बन्धितकार्यकियाजासकताहै।
- ❖ नवोदय विद्यालय तथा केन्द्रीय विद्यालयों में"कानपुर देहात जनपदके अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन"जैसाकार्यकिया जा सकता है।
- ❖ माध्यमिक विद्यालय तथाउच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अनुकरणीयपहल सम्बन्धी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- ❖ प्रस्तुत शोध कार्य में परिषदीय स्तर पर कानपुर देहात जनपदके अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन कार्य किया गया है, अन्य किसी पक्ष को लेकर भी एक शोध कार्य किया जा सकता है।
- ❖ निजी तथा सरकारी विद्यालयों में कानपुर देहात जनपदके अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन किया जा सकता है।
- ❖ उत्तर प्रदेश राज्य एवं अन्य किसी राज्य के परिषदीयविद्यालयों की अनुकरणीयपहल का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

पुस्तकें

1. शर्मा, आर०ए०(2010)। *पर्यावरण* शिक्षा । मेरठ: आर० लाल बुक डिपो।

2.लाल, रमन बिहारी एवं शर्मा, कृष्णा कान्त (2013)। *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ*। मेरठ: आर०लाल०बुक डिपो।

3. कौल, लोकेश (2006)।*शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*। नई दिल्ली: विकाश पब्लिशिंग हाउस प्रा०लि०।

4. गुप्ता, एस० पी० (2017)।*अनुसंधान संदर्शिकासम्प्रत्यय, कार्यविधि* एवंप्रविधि। इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।

5. सिंह, अरुण कुमार (2015)।*मनोविज्ञान,*समाजशास्त्र तथाशिक्षा में शोधविधियाँ। दिल्ली: मोतीलाल बनारसी दास।

6. सिंह, अरुण कुमार (2017)।उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान। दिल्ली: मोतीलालबनारसी दास।

लघु शोध प्रबन्ध

1. यादव, नरेंद्र कुमार सिंह(2002)।अनुसूचित जाति के संदर्भ में प्राथमिक स्तर पर बालिका शिक्षा की स्थिति: एक अध्ययन। पी–एच०डी०शोध प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी। <http://hdl.handle.net/10603/10650>

2. रोशनी (2017)।अध्यापक शिक्षा के नवाचार एवं उनकी चुनौतियों का राजस्थान के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन।पी–एच०डी०शोध प्रबंध,उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय,सरदारशहर।<http://hdl.handle.net/10603/289595>

3. मिश्रा,रंजना(1999)। बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा: प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के संदर्भ में एक अध्ययन। पी–एच०डी०शोध प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।

<http://hdl.handle.net/10603/10742>

4.प्रभा, शैल (2003)।जनपद फिरोजाबाद के लघु एवं वृहद परिवारों की छात्रों के पारिवारिक लगाव का उनके व्यक्तिगत मूल्यों ,सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव। पी–एच०डी० शोध प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।<http://hdl.handle.net/10603/11884>

5. कुमार, अमित (2020)। बांदा जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन। एम०एड०लघु शोध प्रबंध, बुंदेलखंड

विश्वविद्यालयझांसी।<https://archive.org/details/akanksha_book1/mode/2up?view=theater>

6. कुमार, संजय (2008)। हरियाणा के रोहतक मंडल में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक। पी–एच०डी०शोध प्रबंध, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी।

<http://hdl.handle.net/10603/15390>

7.सिंह, अनुराग (2012)। प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण में आ रही विसंगतियों का अध्ययन। पी–एच०डी० शोध प्रबंध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

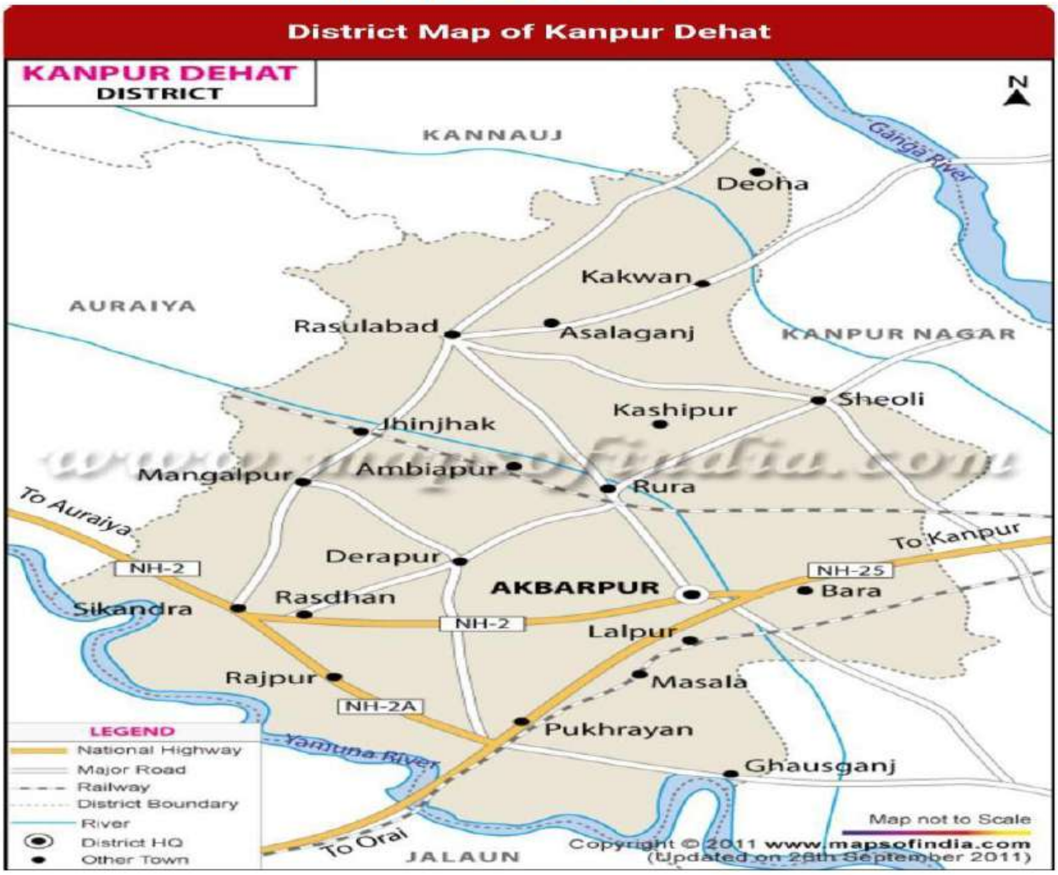
http://hdl.handle.net/10603/224975

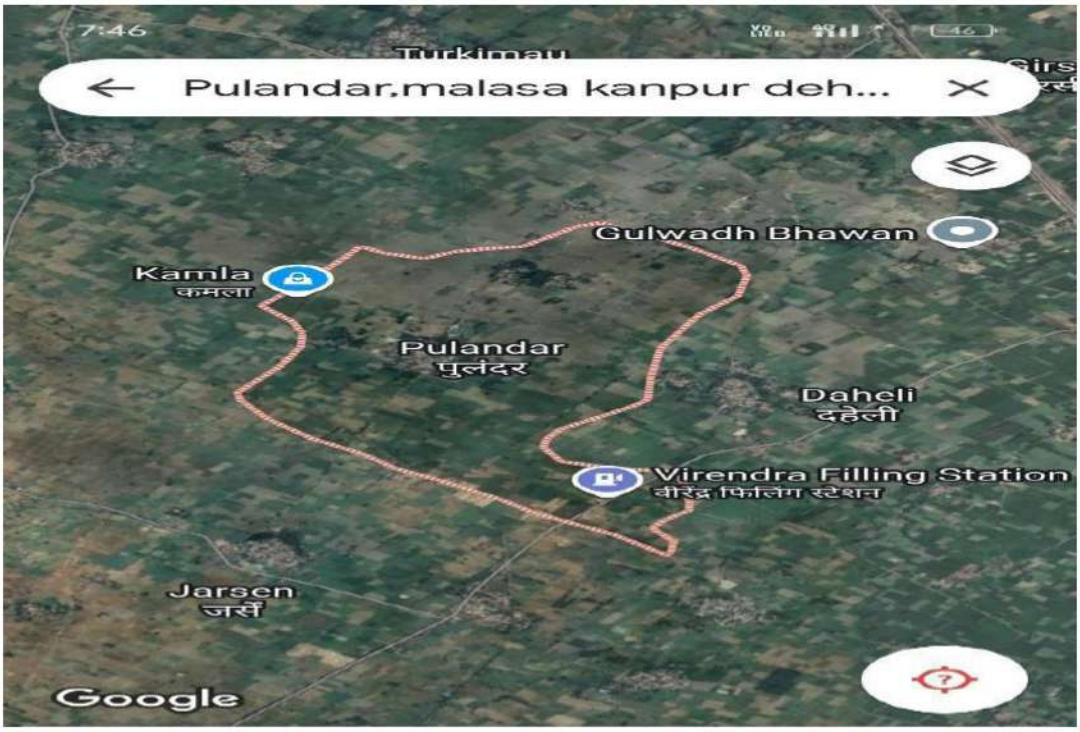
8.पाल, अजय कुमार (2013)। अंबेडकर नगर जनपद में प्राथमिक शिक्षा की स्थिति एवं समस्याओं का अध्ययन।पी–एच०डी०शोध प्रबंध, डॉक्टर राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद।<http://hdl.handle.net/10603/253973>

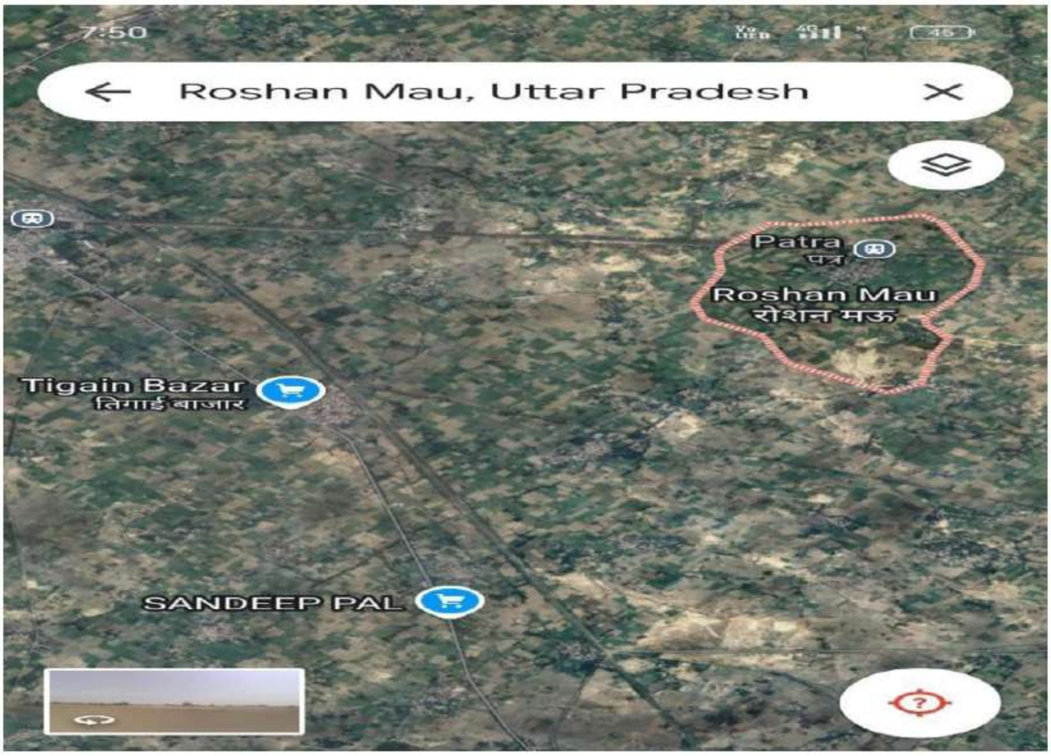
9. https://kanpurdehat.nic.in/

परिशिष्ट-I

अध्ययन से संबंधित मानचित्र






7:50
Roshan Mau, Uttar Pradesh
Patra
पत्र
Roshan Mau
रोशन मऊ
Tigain Bazar
तिगाई बाजार
SANDEEP PAL


7:55
bhadesar Sarvan Kheda Ka...
Rasulpur
Gogumau
रसूलपुर
गोगूमऊ
Gajner-Raipur Rd
Sarwan Khera
सरवन खेरा
van khera stadium
सरवन खेरा स्टेडियम
Bilti
बिल्टी

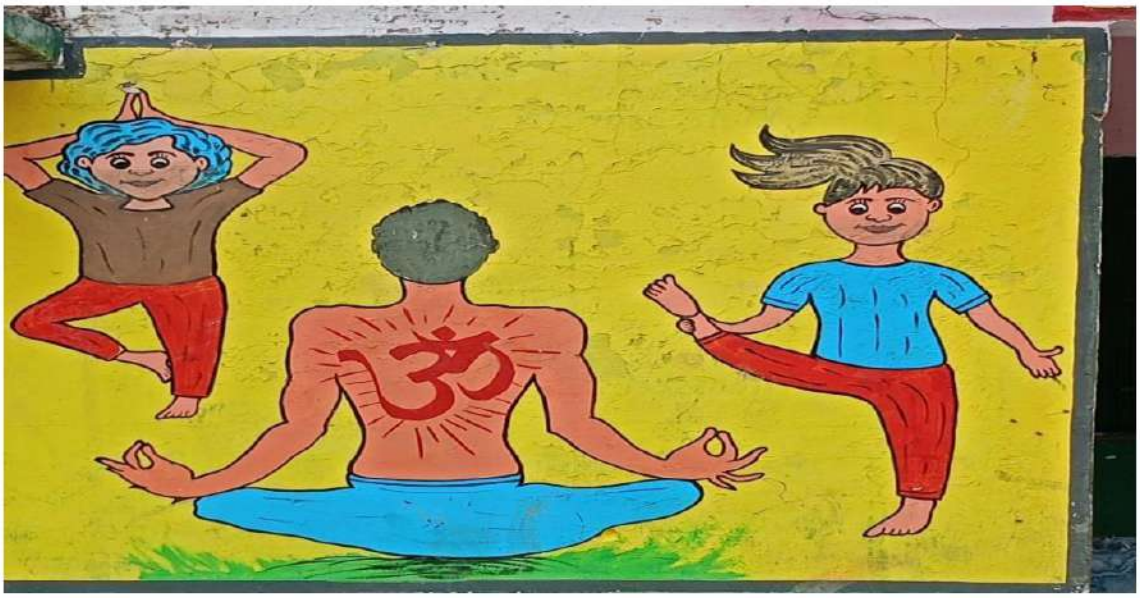

7:52
galuapur derapur kanpur de...
उमरी बुजुर्ग
Baragaon Bhikkhi
बारागॉंव भिक्खी
Derapur Rd
Galuvapur Inter College
गलुआपुर इण्टर कॉलेज
Galuapur
गलुँपुर
Udnapur
उदनापुर
Arsun ki madaiya Derapur kanpur dehat
अर्सुन की मड़ैया डेरापुर कानपुर देहात
AB PRODUCTION &FORM HOUSE
Kishwa Khera
किश्वा खेरा


7:57
chandapur Amrodha Kanpu...
Primary School Chandapur
प्राइमरी विद्यालय चंदापुर
rga tample
दुर्गा टैम्पल
Chandapur
चंदापुर

परिशिष्ट-II

विद्यालय अिलोकन धित्राििली





जीवन वृत्त

व्यक्तिगत सूचना



नाम : मुहम्मद जुनेद
पिता का नाम : श्री पीर मुहम्मद
जन्म तिथि : 05 मई 1991
संपर्क सूत्र : 9935076490
ई-मेल : mohammadjuned0786@gmail.com
पता : ग्राम–बील्हापुर, पोस्ट–अमरौधा, तहसील–भोगनीपुर, जनपद कानपुरदेहात- 209112

अकादमिक:

योग्यता	बोर्ड/विश्वविद्यालय	कुल अंक	प्राप्तांक	प्रतिशत
हाईस्कूल	यू.पी. बोर्ड	600	318	53%
इण्टरमीडिएट	यू.पी. बोर्ड	500	308	61.60%
बी.एस.सी.	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय	1350	720	53.33%
बी.एड.	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय	1200	938	78%
एम.एड.	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय	-	-	-

कौशल/रुचियाँ-

शिक्षण कार्य, कम्प्यूटर चलाना, समाचार पत्र पढ़ना,क्रिकेट खेलना आदि।

Date:

Place: Atarra, Banda (MOHAMMAD JUNED)



"बनेंगे सब सच्चे इंसान, नहीं रहेगा कोई अज्ञान। मेहनत से जो यहाँ पढ़ेगा, आगे चलकर वही बढ़ेगा।"

सुभद्रा कुमारी चौहान

9 789334 236576